दिसम्बर, 1980
वर्ष 16 ❋ अंक 7

जनामृत

मूल्य 1.75

रायचूर के जिला कमिश्नर आदरणीया दादी प्रकाशमणी जी का स्वागत करते हुए प्रवचन कर रहे हैं।

पोरवन्दर में आयोजित 'महिला स्नेह मिलन' में वहां की अनेक समाज सेविका एवं प्रतिष्ठित महिलाओं के साथ ब्र०कु० नलिनी, ब्र० कु० पुष्पा आदि खड़ी हैं।

चण्डीगढ में आयोजित 'नव-विश्व आध्यात्मिक मेले' का उद्घाटन पंजाब के वित्त मन्त्रि डा० केवल कृष्ण मोमबत्ती जलाकर कर रहे हैं

होशियारपुर में आयोजित चरित्र निर्माण प्रर्दशनी का उद्-घाटन वहाँ के डिप्टी कमिश्नर टेप काटकर कर रहे हैं। साथ में उनकी धर्मपत्नी तथा ब्र०कु० शुक्ला, सुषमा व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

कुरुक्षेत्र में ब्र०कु० राजजी राखीं बाँधने के बाद भ्राता विकाश मिश्रा जी को तिलक दे रही है।

कलकत्ता में दुर्गापूजा के अवसर पर काशीपुर गन शैल फैक-टरी में आयोजित प्रर्दशनी का उद्घाटन यहाँ के महाप्रबन्धक भ्राता रावल जी बटन दबाकर कर रहे हैं।

अमृत-सूची

१. मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित	१	११. "नया रास्ता-पुराना रिश्ता"	२७
२. योगी और सहयोगी (सम्पादकीय)	२	१२. प्रभु आये "निज ज्ञान कराने" (कविता)	२९
३. तब से अब तक	४	१३. चित्र परिचय	३१
४. राजयोग द्वारा मृत्यु पर विजय	७	१४. मानव धर्म	३३
५. मेरी आमोद कुटीर (कविता)	८	१५. स्वप्निल निद्रा से जगा गया है कोई (कविता)	३४
६. चित्र परिचय	९	१६. संसार में दुख और अशुभ क्यों है ?	३५
७. सुख शान्ति की तलाश	११	१७. नवरात्रि, दशहरा एवं दीपावली के अवसर पर की गई ईश्वरीय सेवाऐं	३८
८. चित्र परिचय	१९	१८. हम बच्चे भोले-भाले हैं	४०
९. खुदा दोस्त (कविता)	२४		
१०. शक ! शक ! ! शक्की ! ! !	२५		

मुख पृष्ठ के चित्र से सम्बन्धित

विश्व में शान्ति का आह्वान

आज सभी धर्मों के लोग विश्व में शान्ति का आह्वान कर रहे हैं। परन्तु वे जितना शान्ति को बुलाते हैं, शान्ति रूपी पक्षी उड़कर उतना ही दूर भागता जाता है। विश्व में न जाने कितने शिषर सम्मेलन और रुद्र यज्ञ हुए हैं परन्तु शान्ति उतनी ही दूर हो गयी है। आज संसार में मन्दिरों, गुरुद्वारों, गिरिजाघरों की संख्या तो बढ़ती जाती है परन्तु अशान्ति के भी उतने ही रूपान्तर बढ़ते जाते हैं। आज विज्ञान ने इतनी उन्नति की है कि मनुष्य के लिए चांद पर जाना भी सम्भव हो गया है परन्तु आज शान्ति भी पृथ्वी से उड़कर चांद तक, नहीं-नहीं परमधाम में चली गयी है। इसका कारण यही है कि मनुष्य शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा से तथा आत्मा के शान्ति रूपी धर्म से दूर हो गया है और अशान्ति पैदा करने वाले जो विकार (काम क्रोधादि) हैं उन्हें उसने अपने मन में पक्के डेरे डालने का स्थान दिया है।

अतः अब शान्ति शान्ति चिल्लाने से या (शान्ति पाठ करने से) मन की शान्ति नहीं होगी। नाही शिषर सम्मेलन करने से विश्व में शान्ति होगी, बल्कि शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा की स्मृति मन को टिकाने से तथा शान्ति रूपी स्वधर्म में स्थिति होने से ही शान्ति होगी। अतः आज आवश्यकता है ऐसे सम्मेलनों, सतसंगों या शिक्षा केन्द्रों की जो कि मनुष्य को शान्ति रूपी स्वधर्म में स्थिति होने की शिक्षा दें और शान्ति के सागर परमपिता परमात्मा से योग-युक्त होने की प्रेरणा दे और काम-क्रोधादि विकारों से छुटने की प्रेरणा दे। आज यह कार्य स्वयं परमपिता परमात्मा शिव ही कर रहे हैं और प्रजापिता ब्रह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय भी इसी शुभ कार्य में लगा हुआ है।

सम्पादकीय

योगी और सहयोगी

'योगी' शब्द का उच्चारण करने से सबसे पहले तो हमारे मन पर वह चित्र उभर आता है जिसमें दिखाया गया है कि प्रकाश एवं शक्ति की एक तीव्र धारा योगाभ्यासी पर उतर रही है और उसे योग से चकाचौंध अथवा सराबोर करके दसों दिशाओं में प्रकाश एवं पवित्रता का संचार करते हुए, सारे वातावरण में एक नव चेतना, एक दिव्यता और एक अलौकिकता प्रकीर्ण करती हुई, अविरल गति से, शान्ति फैलाती हुई चली जा रही है। इस चित्र में योगाभ्यासी पर दृष्टि डालने से लगता है कि योग के इस प्रवाह में वह अपने पार्थिव देह की सुध भूल चुका है और अपने लाल की लाली में स्वयं भी लाल हो गया है। अब उसे प्रकाशमय नेत्र, प्रकाश ही का अनुभव और प्रकाश ही की ईश्वरीय गोद अथवा प्रकाश ही का ओढ़ना मिला हुआ है जिसमें वह आन्तरिक सुख में विभोर होकर उस सुख ही में रमा हुआ है। उसकी वृत्ति, उसकी स्मृति, उसकी दृष्टि, उसकी काया—सभी में ईश्वरीय शक्ति और ज्योति ने एक नया जीवन, एक नया रस, और एक नया स्फुर्ण भर दिया है कि जो एक सुहावनी बाढ़ की तरह उसके भीतर और बाहर उसमें आत्मसात और आलिंगन कर रहा है।

यह चित्र मन को इतना भला लगता है और इतना प्रभाव शाली भी कि इस चित्र के कुछ क्षण मन पर अंकित रहने से मन स्वयं को उस अनुभूति की स्थिति में पाता है परन्तु जब हम सोचते हैं कि मनुष्य को व्यवहार क्षेत्र में भी तो पग धरने होते हैं तब हमारे सामने योगी का एक ऐसा चित्र प्रगट हो जाता है जो एक फरिश्ते की न्यायी एक उज्जवल प्रकाश का बना हुआ है कि जिस प्रकाश में एक चुम्बकाय शक्ति भी है, एक अनोखी शीतलता भी और एक उत्साह भरने वाली उष्णता भी तथा अपावन को पावनता का स्पर्श देने वाली एक विमलता भी। इस चित्र में योगी के नेत्र, कर्ण, मुख इत्यादि दिखायी तो देते हैं परन्तु जैसे अतीत काल में प्रसिद्ध ढ़ाका की बारीक मलमल के पीछे किसी का चेहरा थोड़ा अस्पष्ट-सा दिखाई दिया करता होगा वैसे ही यह कर्म योगी मानो प्रकाश की एक बारीक-सी ओढ़नी ओढ़े हुए दिखाई देता है। किसी को ऐसा दिखाई न भी देता हो तो भी स्वयं में वह एक अजीब-सी अंगड़ाई, प्रभु-प्यार की एक मीठी-सी कसक, अपने प्रियतम के प्रति एक समर्पण भाव, अपने कर्त्तव्य के प्रति एक विशेष निष्ठा और अन्य के प्रति करुणा भाव का अनुभव करते हुए ऐसा महसूस करता है कि दिनो दिन वह अपने चहुं ओर आकाश की बजाय प्रकाश में जाता जा रहा है और उसका शरीर स्थूल की बजाय ट्राँस लाईट के जैसा होता जा रहा है।

ऐसा जो योगी है, उसे किसी भी अच्छे कार्य में हाथ डालने में खुशी होती है। वह पात्र को आनन्द शान्ति, शक्ति के ईश्वरीय वरदानों से लाभान्वित करने में गद्‌गद् अनुभव करता है क्योंकि दूसरों का आशीर्वाद प्राप्त करने के अतिरिक्त उसे एक आन्तरिक आह्लाद का अनुभव करता है।

जैसे योगी सदा ईश्वरीय कार्य में सहयोगी होता है, वैसे ही सहयोगी भी योग-स्थिति की ओर बढ़ता है कोई व्यक्ति यदि योगाभ्यास न भी करता हो तो वह भी जब ईश्वरीय कार्य में सहयोग देने के लिए संकल्प करता है तो, देखा गया है, उसमें योग के प्रति भी आकर्षण की लहर उत्पन होने लगती है। जब वह तन और धन से भी ईश्वरीय सेवा के कार्य में किसी-न-

किसी प्रकार से निमित्त बनना शुरू करता है तो ईश्वरीय शिक्षा केन्द्रों में उसका आना-जाना तथा वहाँ के ज्ञान और योग रूपी धन से अपना सौभाग्य बनाना भी धीरे-धीरे बढ़ता जाता है। ज्ञान और योग के प्रति पहले उसकी यदि रुचि नहीं होती थी और यदि वह उसके लिए समय नहीं निकालता था तो अब वह धीरे-धीरे सहयोगी बनने के फलस्वरूप यह सब करने लगता है। इसके विपरीत देखा गया है कि जो व्यक्ति आज अपनी परिस्थितियों में दुःख और अशान्ति के किन्हीं कारणों से निकल कर शान्ति प्राप्त करने के लिए योग की ओर आकर्षित होते हैं, वे यदि सहयोगी नहीं बनते तो आगे चलकर उनके पुरुषार्थ में ढीलापन आना शुरू हो जाता है क्योंकि वे अपने लाभ में सन्तुष्ट होकर दूसरों की हित-कामना नहीं करते। जैसे एक पेड़ जल प्राप्त न होने से धीरे-धीरे सूखने लगता है, वैसे ही सहयोग न देने वाले को योग और सहयोग रूपी जल मिलना बन्द होता जाता है। और अन्ततोगत्वा उसकी योग रूपी बढ़ती हुई लता मुरझाने और सूखने लगती है। अतः 'पवित्र बनो और योगी बनो' के साथ-साथ वास्तव में 'सहयोगी बनो'—ये हित-संकेत भी ज़रूरी है। जो ईश्वर से प्यार करता है, वह ईश्वर के कार्यों से ज़रूर प्यार करता होगा और इस प्यार को तन, मन, धन से अभिव्यक्त करता होगा। जिन देशों में अंग्रेजी भाषा बोली जाती है, वहाँ यदि एक व्यक्ति का दूसरे से स्नेह हो तो वह मुहावरे में कहता है 'I love your pet' अर्थात मुझे तुम्हारे पालतू जानवर से भी प्यार है। भाव यह है कि जब तुम्हारे जानवर से प्यार है तो स्वयं तुमसे तो बहुत प्यार होगा ही। जब एक जानवर और मनुष्य के लिए लोग यह कह देते हैं तो प्रभु-प्यार, जिससे प्यार की और कोई ऊँची सीमा नहीं, के लिए तन, मन, धन से उद्गार व्यक्त करना अर्थात ईश्वरीय सेवा में हाथ बँटाना तो स्वभाविक ही है।

सभी ईश्वर-विश्वासी लोग परमात्मा को अपना माता-पिता, सखा, स्वामी और सर्वस्व मानते हैं। तब सोचने की बात है कि सेवक अपने स्वामी के लिए सखा अपने सखा के लिए तथा हर कोई अपने घनिष्ठ सम्बन्धियों के लिए संसार में क्या कुछ नहीं करता। अतः योग जो परमात्मा से टूटे हुए सम्बन्धों को फिर से जोड़ने का नाम है, उसमें स्थित होने वाला व्यक्ति यदि तन, मन, धन से प्रीत की रीत निभाना नहीं जानता तो वह अभागा है योग की जिस स्थिति का हमने प्रारम्भ में वर्णन किया है, उस स्थिति में आत्मा को जिस ईश्वरीय प्यार का अनुभव और जिन अनमोल ख़ज़ानों की प्राप्ति होती है, उनके बदले में वह मनुष्य, यदि वह विश्व का महाराज भी हो, अपने सब ख़ज़ाने प्रभू-अर्पण करने से भी नहीं चुका सकता। परन्तु यदि योग की दूसरी स्थिति को भी हम लें अथवा योग की प्रारम्भिक भूमिका ही पर हम विचार करें तो उससे मनुष्य बुरे कर्मों से जो मुक्ति पाता है, विकारों और वासनाओं की कैद से जो छुटकारा प्राप्त करता है और तन, मन तथा धन को बुराई के धन्धों में लगाने से जो छूट पाता है, उसका मोल भी कोई नहीं चुका सकता तन, मन, धन को ईश्वरीय सेवा में प्रयोग करके सहयोग देना तो गोया अपने ही योग में बल भरना और उन्नति करना है। और हमें यह मालूम रहे कि ईश्वरीय कार्यों में जो सहयोग देता है, स्वयं ईश्वर उसको सहयोग और योग देता है। अतः 'पवित्र बनो, योगी बनो और सहयोगी बनो'।

—जगदीश

—:०:—

"तब से अब तक"

'धारा वाहिक सत्य कथा'

लेखक : ब्र० कु० रेवादास, विलासपुर

द्वापर से ब्रह्मा की रात्रि आरम्भ होती है। कलियुग के अन्त तक घोर अन्धियारा छा जाता है। आत्मा को पतित करने के लिए पाँच विकार उसका पीछा करते हैं। कलियुग की घोर रात्रि में अनेक धर्म, अनेक शास्त्र एवं अनेक विद्वान, आचार्यों के होते हुए भी कोई आत्मा को इन विकारों के पंजे से नहीं छुड़ा सकता। गिरावट इस सीमा तक पहुँच जाती है कि इन विकारों को स्वाभाविक मान कर स्वीकार किया जाने लगता है। परिणाम स्वरूप जो आत्मा दिव्य गुण रूपी आभूषणों से भरपूर होती है वह शनैः-शनैः आभूषण हीन होने लगती है ! रात्रि के अन्तिम पहर अर्थात् संगम पर केवल परमात्मा शिव ही आत्मा को फिर से दिव्य गुण सम्पन्न बनाने का ईश्वरीय ज्ञान एवं राजयोग सिखाते हैं। प्रस्तुत कहानी में यही चित्रण किया गया है।

सन्ध्या बीत चली थी। दिन-भर सफर करते रहने से मुझे थकान-सी महसूस होने लगी थी। रात का अन्धेरा बढ़ता जा रहा था। मुझे तनिक आभास होने लगा था कि मैं वहीं पथ से भटक चुकी हूँ। फिर भी मैं चली जा रही थी। निरुद्देश्य ! पता नहीं कहाँ और क्यों ? मैं सचमुच राह भूल गई थी। भूल पर भूल होती चली गई। मुझे भय लगने लगा। तभी अचानक मैंने देखा एक काली भयानक छाया मेरा पीछा कर रही है। मैं ठिठक गई। क्योंकि छाया एक नहीं, पूरी पाँच थी। मुझे यह समझते देर नहीं लगी, कि इस वीरान जंगल में ये कोई चोर-लुटेरे ही हैं। अब क्या होगा ! मेरी चिन्ता बढ़ने लगी। श्वाँसों की गति तीव्र से तीव्रतम होती गई। मैं अमूल्य आभूषणों से लदी हुई थी। सिर से पैर तक। काली परछाईयाँ बराबर मेरी ओर बढ़ रहीं थी। उनकी गति तेज़ हो गई थी और मेरे हृदय की धड़कन भी बढ़ गई थी।

दूर कहीं बस्ती में मन्दिर के घड़ियाल की आवाज़ सुनाई दे रही थी। शायद आरती उतारी जा रही थी। तभी मुझे एक उपाय सूझा। क्यों न इसी तरफ अपने पाँव बढ़ा लूँ। शायद ये लुटेरे मेरा पीछा छोड़ दें। इसी विचार से लम्बे-लम्बे डग भरती हुई मैं मन्दिर पहुँची। माथा टेका। आरती उतारी। ज्यों ही मैंने राहत की साँस लेनी चाही, त्योंही मेरा माथा ठनका। यह क्या ? वे परछाईयाँ यहाँ भी आ पहुँची थीं। मैं सहम उठी थी एक बार। रात का अन्धेरा शनैः शनैः बढ़ता जा रहा था। और उन भयानक आकृतियों का घेरा निरन्तर मेरी ओर बढ़ता चला गया। मैं एक बार तो गिरते-गिरते बची। बड़ी सावधानी से अपने कीमती आभूषणों को सम्भालते हुए मैं वहाँ से खिसक गई। मन्दिर के ठीक सामने शहर के बीच में विभिन्न रंगों के प्रकाश से सुसज्जित एक भारी पंडाल अत्यन्त सुशोभित स्पष्ट नज़र आ रहा था। लाउडस्पीकर की ऊँची-ऊँची आवाज़ से यह प्रतीत हो रहा था कि अवश्य ही यहाँ किसी देवी का जागरण हो रहा होगा। अनेक नर-नारी, बाल-युवा एवं वृद्ध पंडाल में इधर से उधर और उधर से इधर घूम रहे थे। मैंने तुरन्त निर्णय लिया कि जहाँ शक्ति जागरण हो रहा है, और कि जहाँ अनेकों व्यक्तियों का जन समूह एकत्रित है, वहीं चल कर संरक्षण लेना चाहिए। शायद इन दुष्टों से पीछा छूट जाए। इसी विचार से मैं तेज़-तेज़ कदमों से उधर चल दी।

×●×

हवा के हल्के-हल्के हिलोरे मेरे हृदय को स्पर्श करते हुए मुझे थोड़ी ठण्डक प्रदान कर रहे थे। वन्य प्राणियों की चुर-पुर कानों से टकरा कर नेपथ्य में विलीन हो रही थी। मैंने विशाल पंडाल में बेखटके प्रवेश किया। भीड़ को चीरती हुई मंच पर देवी की सुन्दर सुस्सजित प्रतिमा के निकट पहुँच कर मैंने गहरी साँस ली। दोनों हाथ जोड़कर देवी की प्रतिमा के चरणों में मस्तक टेक दिया। 'माँ, मेरी रक्षा करो। मेरी लाज ख़तरे में है। आप भी एक नारी हो और नारी हृदय की वेदना समझ सकती हैं। एक वयोवृद्ध पुजारी शायद आर्शीवाद दे रहा था।

भयभीत और सहमी हुई-सी सम्भल कर जैसे ही मैं उठ कर मुड़ने को हुई, मेरे मुख से एक हल्की-सी चीख़ निकल कर वायुमण्डल में विलीन होकर रह गई। मेरे पैरों तले की ज़मीन खिसक रही थी। मेरा कलेजा मुँह को आने लगा था। मैंने देखा सामने से वही भयानक काली आकृतियाँ मेरा पीछा करते-करते पुनः यहाँ भी प्रकट हो गई थी। अब बचने का कोई चारा नज़र नहीं आ रहा था। मैं चारों ओर से घिर चुकी थी ! बड़ी दयनीय स्थिति थी। मैंने याचना की दृष्टि से चारों ओर नज़र घुमाई। बचाओ, मुझे बचाओ ! परन्तु अफसोस। किसी का साहस नहीं हुआ, कि कोई आगे बढ़ कर इन भूतों से मुकाबला करे। सभी जैसे कि कर्त्तव्यविमूढ़ हो गए थे। निस्तब्ध होकर सभी तमाशा देख रहे थे। यह क्या ? कैसी अर्चना है ! कैसी पूजा है, इस देवी की ! एक ही पंडाल के भीतर एक जड़ देवी मूर्ति की पूजा का स्वाँग और चेतन देवी की लाज लूटी जा रही है ! उस पर भी कोई विरोध नहीं किसी का। स्वार्थ से भरी हुई, इस सभा को मैंने घृणा की एक नज़र से देखा और उठ खड़ी हुई, वहाँ से। रहे-सहे आभूषणों को समेटते हुए मैं पंडाल से बाहर निकल गई। आशा की अब कोई किरण नज़र नहीं आ रही थी। मैंने देखा कि चारों ओर जहाँ तक दृष्टि जाती थी, अन्धेरा ही अन्धेरा नज़र आ रहा था।

एक चट्टान पर मौन खड़े होकर मैंने एक दृष्टि मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारे और कानून के कच्चे मकान पर डाली। मैंने देखा, धर्म रो रहा था। शास्त्र बेहोश हो चुके थे। धर्म-संस्थापक थक कर निःस्वाह्य अवस्था में असमर्थता प्रकट कर रहे थे। भक्ति के शोर में कुछ भी स्पष्ट सुनाई नहीं दे रहा था। सत्य और ईमान का दूर घाटी के उस पार कत्ल हो रहा था। पवित्रता का अपहरण हो चुका था। नैतिकता और चरित्रता को एक गहरी कब्र में दबाया जा रहा था। दिव्य गुणों के खज़ाने चोर लूट रहे थे। शान्ति रूठ कर मायके जा रही थी। कानून और मर्यादाएँ हाथ खड़े कर, हार मान चुके थे। धर्म के नाम पर कृत सभी संस्थायें स्वार्थ-लोलुपता के कारण शक्ति हीन और दयनीय स्थिति में मौन खड़ी थी। राजनीति का दूर खुले मैदान में नग्न नृत्य हो रहा था।

मैं अधिक न देख सकी ! आँखें मुद ली। क्या इस भरे संसार में किसी की हिम्मत न थी कि कोई मेरी रक्षा करता ! उफ ! सभी के देखते ही देखते मैं लुट गई। इन्ही विचारों में मैं बेसुध होकर पड़ गई। मुझे लगा कि सागर की तलहटियों, पर्वतों के उच्च शिखरों, घने जंगलों एवं गहरी घाटियों में कहीं भी मैं सुरक्षित नहीं रह सकती। रात के गहरे सन्नाटे में स्वयं को असाह्य पाकर मैं चित्त होकर रह गई, फिर क्रमशः वही भयानक काली आकृतियाँ बारी-बारी मेरे सभी अमूल्य अभूषणों को लूटती चली गई। तब तक जब तक कि मैं पूर्ण रूप से खाली नहीं हो गई। और फिर मैं स्वयं भी लुट चुकी थी। मेरा मुझ से सब कुछ छिन चुका था। और मुझे अत्यन्त असहनीय पीड़ा का अनुभव होने लगा। मेरे दुःख की सीमा टूट चुकी थी। मैं पागल हो गई थी। हाँ, सचमुच पागल ही रहना चाहती थी। मुझे लगा कि मैं किसी अज्ञात बन्धन में बन्धी हुई हूँ।

रात का अन्तिम पहर हो चला था। चारों ओर दूर-दूर तक मन्दिरों में घड़ियाल बज रहे थे। ऊँचे-ऊँचे शब्दों में गुरुद्वारे से उच्चारण हो रहा था। सभी

ओर शोर-ही-शोर सुनाई देने लगा था। पक्षियों ने भी प्रभात का स्वागत करने के लिए चहचहाना आरम्भ कर दिया था। मैं असमंजस में पड़ गई। अब क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? किसे पुकारूँ ? ये महान शत्रु इतनी सहज पीछा छोड़ने वाले नहीं थे। बड़े शक्ति शाली लगते थे वे। इनके आगे खड़े होने की कौन हिम्मत कर सकता था ? हाँ, हाँ अब तक इन पर कोई भी तो विजय नहीं पा सका था ? समूचे विश्व में इनका ही तो एकाधिकार है। इतिहास साक्षी है, शास्त्र साक्षी है कि बड़े-बड़े ऋषि, मुनि भी इनके सामने टिक न सके थे। फिर मैं···मैं तो एक साधारण 'आत्मा' हूँ।

इसी उधेड़-बुन में अचानक किसी ने मृदुल स्वर में मुझे पुकारा। कौन ? मैंने आंखें खोली। मैं आश्चर्य चकित रह गई। सन्मुख श्वेत वस्त्रों से सुसज्जित प्रकाशमय मूर्तियाँ अपने नेत्रों से प्रकाश की शक्ति-शाली किरणें मेरे ऊपर बिखेरते हुए बोली, "आत्मन्! डरो नहीं—घबराओ नहीं। तुम्हारी सज़ा पूरी हुई। हम तुम्हें इस बन्धन से मुक्त करने आई हैं।" "उन्होंने आगे कहा कि वो देखो सदूर पूर्व में रवि की लालिमा रजनी के अन्धकार को मिटाकर सूर्योदय होने का संकेत दे रही हैं।" मैंने विस्मय से उनके चमकते चेहरों को निहारा और निवेदन किया, "आप कौन हैं, 'यहाँ तक कैसे पहुँची हैं ? यह स्थान ख़तरे से ख़ाली नहीं है। यदि वे भूत कहीं से अचानक आ टपके तो तुम्हें भी मेरी तरह बन्दी बना लेंगे, इसलिए आप शीघ्र ही कहीं सुरक्षित स्थान पर चली जाये।" उन्होंने बड़ी निर्मयता से और मुस्कराते हुए कहा, "चिन्ता मत करो बहन ! हम किसी से डरते नहीं हैं। हमारे सामने वे भूत टिक ही कैसे सकते हैं।" मैंने फिर पूछा, 'क्या आप उनसे भी अधिक शक्ति-शाली हैं जो वे आपसे भी डरने लगेंगे ?" "निस्संदेह।" उन्होंने दृढ़ता से उत्तर दिया और कहने लगी, "हम सभी बाल-ब्रह्मचारिणी हैं हमने ईश्वरीय ज्ञान एवं सहज राजयोग से स्वयं को इतना तो सशक्त बना लिया है कि अब कोई भी शत्रु हमारे निकट आने का दुस्सहास कर ही नहीं सकता।" "क्या आप मुझे भी ऐसा बना सकती हैं" मैंने विनय की। "अवश्य ही।" उन्होंने स्नेह-भरे शब्दों से मेरी पीठ ठोकी और कहने लगीं "हमें जिसने यह अपार शक्तियों का ख़ज़ाना दिया है वास्तव में वह सर्व-शक्तिमान् परमात्मा शिव स्वयं वर्तमान समय हम सभी की ऐसी असहाय स्थिति को देखकर इस भूमण्डल पर अवतरित हो चुके हैं। उनका ही हमें यह फरमान है कि तुम्हारी तरह इस संसार रूपी बन्दी-गृह में सड़ रही सभी आत्माओं को मुक्त करने के लिए उनका दिया हुआ ईश्वरीय ज्ञान और राजयोग सिखा कर उन्हें भी मुक्त करें।" मैंने बड़ी आतुरता से उन से आग्रह किया कि क्या मैं भी उनकी तरह स्वतन्त्र हो सकूंगी ? उन्होंने बड़े ही स्नेह से मुझे बताया, "क्यों नहीं ! इसके लिये तुम्हें सात दिन नियमित रूप से इस ईश्वरीय ज्ञान को समझना पड़ेगा। साथ में जो शहर है वहाँ किसी से भी पता पूछ लेना "प्रजा-पिता ब्रह्मकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय।" मैंने उन्हें हार्दिक धन्यवाद देते हुए बिदाई दी और तब से अब तक मैं इस ईश्वरीय विश्वविद्यालय में ज्ञान-योग की शिक्षा नियमित रूप से प्राप्त कर रही हूँ। मेरे सारे बन्धन शनैः-शनैः स्वतः ही ढीले होते जा रहें हैं। खोया हुआ ख़ज़ाना पुनः प्राप्त हो रहा है, और अब एक ही लग्न है कि कब पुनः उन्ही दिव्य आभूषणों से लद कर अपने पियर घर जाऊँ।

—:o:—

राजयोग द्वारा मृत्यु पर विजय

ब्र० कु० अनुराधा भालेराव, धतौली, नागपुर

"मानव मर्त्य है" यह प्रकृति का नियम है। गीता में भी कहा है—

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृहणीत नरोड पराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा—
न्यन्यानि संयाति नवानि देही।

इस श्लोक से भी सिद्ध होता है कि शरीर नश्वर है, पर आत्मा नहीं। आत्मा तो एक शरीर छोड़ नया चोला धारण कर इस सृष्टि रूपी रंग-मंच पर फिर से अपना पार्ट बजाने आ जाती है। आज से चार वर्ष पूर्व आध्यात्मिक जगत से मेरा नाम मात्र का भी संपर्क न था। २९ जून १९७७ में मेरे पेट (ट्यूमर) का ऑपरेशन हुआ था। उस समय मौत के डर से आँखों की प्यालियाँ अश्रु जल से भरी रहती थी, तथा निराशा का अंधकार जीवन में छा गया था। इसके बाद योगायोग से मैं प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विद्यालय के संपर्क में आई। यहाँ मैंने राजयोग का अभ्यास किया। इसमें मुख्य तीन बातों पर जोर दिया जाता है—

१. खुद को शरीर से अलग आत्मा समझो।
२. सर्व आत्माओं का पिता परमात्मा है अतः निरंतर उसी की याद में रहो।
३. दुनिया एक नाटक है, अपने को पार्टधारी समझो।

३ मार्च १९८० को ब्रेस्ट कैंसर का मेरा दूसरा ऑपरेशन हुआ। कैंसर का नाम सुनते ही लोगों के कलेजे काँप उठते हैं। कैंसर का नाम मौत की पक्की गारंटी हो गई है। मरीज को मालूम हो जाता है कि मौत उसके आस-पास मँडरा रही है, और वह कभी भी काल का ग्रास बन सकता है। पर रोग पीड़ित व्यक्ति यह भूल जाता है कि मानव मर्त्य है सभी शरीरधारियों को चाहे वे रोग पीडित हों या निरोगी हों एक दिन इस दुनिया को छोड़ दूर शांतिधाम में वापस चले ही जाना है। भारतीय पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं, तो फिर मौत से डर क्यों।

इस ऑपरेशन के समय मेरा मन (प्रथम तथा द्वितीय) मन स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन करने लगा। पहले की अपेक्षा यह ऑपरेशन तिगुना बड़ा था तथा समय भी तीन घंटे लगे थे, पर राजयोग का अभ्यास होने के कारण परमात्मा की याद से मन तुरंत स्थिर हो गया, और मुझे ऐसा लगा कि परमात्मा मुझे अशरीरीभव का वरदान देकर भय-युक्त कर रहा है। परमात्मा पर पूरा विश्वास होने के कारण मन में यह दृढ़ विश्वास था कि बीमारी के काफी बढ़ जाने पर भी (दूसरी स्टेज) यह शरीर नष्ट नहीं होगा, क्योंकि परमात्मा को इस शरीर द्वारा ईश्वरीय कार्य कराना है। मौत का डर तो पहले से ही न था, पर मैं इस बीमारी को एक परीक्षा मानने लगी। उसका सामना करने के लिये योग बल के आधार से मन को तैयार कर लिया। निरंतर सोचती कि परमात्मा परीक्षा ले रहा है कि "मैं मौत से कितना डरती हूँ। यहाँ से वापस जाने की तैयारी कितनी है आदि।" इस बीमारी को तो मैं परमात्मा ने दिया हुआ वरदान मानती हूँ। उसने मुझे तार भेज कर चौकन्ना कर दिया कि "बच्ची घर वापस शीघ्र ही आना है, सत्कर्मों की गठरी बाँध तैयार रह।" अकेला आना और अकेला ही खाली हाथ वापस जाना है। तो फिर इस दुनिया से, सगे संबंधियों से मोह ममत्व क्यों ?

इसका अनुभव मुझे उस समय हुआ जब मैं

"ऑपरेशन रूम" में गई। ऑपरेशन के समय सगे संबंधी करीब २५-३० लोग बाहर बरामदे में बैठे थे, पर शारीरिक कष्ट सहन करने में कोई भी हाथ नहीं बढ़ा सकता था, और न कोई अंदर ही आ सकता था। सिर्फ़ परमात्मा का ही साथ था। उस समय मुझे अनुभव हो रहा था कि "मेरा पिता परमात्मा मेरे सिरहाने खड़े होकर मुझे धीरज बंधा रहा है कि इस नश्वर देह को यही छोड़ मेरे साथ चल ऊपर से नज़ारा देखेंगे। इस नश्वर देह से ममत्व क्यों? आत्मा तो अमर है। धीरे-धीरे मुझे भी निराकारी स्वरूप का अनुभव होने लगा, और में आत्मस्वरूप के चिंतन में लीन हो गई ऑपरेशन कब पूरा हुआ पता न चला।

राजयोग सीखने के कारण मेरे मन से मौत का डर निकल गया है; तथा आत्मिक बल दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। दिल से मौत का डर निकल जाना योग के पंख लगाने पड़ेंगे। इसी के आधार से देह बंधन को तोड़कर वह स्वतंत्रता का अनुभव करेगी।

इस रोग पीड़ित भाई-बहनों से मैं अनुरोध करूँगी कि वे अपने दिल से मौत का डर निकाल दें। हम देखते हैं कि इस कलियुगी दुनिया में मौत न छोटा देखती है न बड़ा, जिसका समय आया वह चला तो फिर डर क्यों? पर हम कितने भाग्यशाली है कि परमात्मा हमें सचेत कर देता है कि जाने के पूर्व हम अच्छे कर्म करें जिससे बाद में पछताना न पड़े। तो आओ हम अच्छे कार्य करने में लग जायें, अधिक से अधिक समय परोपकार में लगायें, नश्वर शरीर का सदुपयोग करें, तथा अंत में सत्कर्मों की गठरी बाँधकर, हँसते-हँसते इस दुनिया से बिदा लेकर अपने प्यारे पिता परमात्मा के पास चले जायें।

—रवीन्द्रनाथ

—:०:—

"मेरी आमोद कुटीर"

(ब्र० कु० राजकुमारी, शालीमार बाग, देहली)

मेरे मन की नैय्या का तीर,
मेरी सच्ची आमोद कुटीर,
मधुबन में! मधुबन में!
बुद्धि में भरते ज्ञान तूणीर,
माया भगती बन बेपीर,
मधुबन में! मधुबन में!
बादल भरते जाते नीर,
खुल जाती अपनी तकदीर,
मधुबन में! मधुबन में!
विघ्नों को देते चीर,
समस्याएँ होती पानी में लकीर,
मधुबन में! मधुबन में!
विकार भटकते बन फकीर,
दिख जाती उन्हें योग शमशीर,
मधुबन में! मधुबन में!
मर्यादाओं की ठहरी-ठहरी झील,
बाबा से बढ़ती जाती प्रीत,
मधुबन में! मधुबन में!
ईंट ईंट सुनाती परमात्म गीत,
चहुँ ओर बाप के चरित्रों की भीत,
मधुबन में! मधुबन में!
कण-कण लगता अपना मीत,
आप से आप आएँ रुहानी रीत,
मधुबन में! मधुबन में!
मेरी सच्ची आमोद कुटीर—
मधुबन में! मधुबन में! ●

बम्बई के पाटकर हाल में "सिटी स्पोर्टस एण्ड कल्चरल एसोसियेशन द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० योगिनी बहन मुख्य अतिथि के रूप में प्रवचन कर रही हैं। मंच पर वहाँ के सचिव व प्रधान बैठे हैं।

कुल्लु के कृषि-विश्व-विद्यालय के सब इन्सपैक्टर भ्राता कर्मचन्द को राखी बाँधने पश्चात् ब्रह्माकुमारी बहनें उनके खड़ी हैं।

राजकोट के प्रसिद्ध हॉल में आयोजित समारोह में वहाँ के कलक्टर भ्राता डी० सी० बाजपेई प्रवचन कर रहे हैं। मंच पर ब्र० कु० कुमुद, मुलजी भाई, भारती बहन तथा कलक्टर धर्म पत्नी बैठे हैं।

बोकारों में आयोजित प्रर्दशनी को देखने के पश्चात् वहाँ के काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भ्राता पी० एन० त्रिपाठी के साथ ब्र० कु० कुसुम चन्दा, अंजु व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

भारत सरकार के उप वित्तमंत्री भ्राता मगन भाई बरोट तथा उस धर्मपत्नी मु ालय (माऊंट आबू)पधारी थी। इस चित्र में वे मुख्य प्रशासिका ब्र० कु० प्रकाश मणीजी के साथ दिखाई दे रहे हैं।

चण्डीगढ़ में आयोजित 'नव-विश्व आध्यात्मिक मेला' के अवसर लगाये गये 'राजयोग शिविर' का उद्घाटन पंजाब के विकास मं कर रहे हैं। साथ में ब्र०कु० चन्द्रमणी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं

कुरुक्षेत्र में आयोजित 'मानव का भविष्य' सम्मेलन के अवसर पर मंच पर दायें से ब्र०कु०, जगदीशचन्द्र, ब्र०कु०, हृदय मोहिनी, ब्र०कु०, चन्द्र मणि जी बैठी हैं। ब्र०कु० सरलाजी ब्र०कु ह्रदयमोहिनीजी को बैज पहना रही है।

कत्ता के प्रसिद्ध सी० आई० टी० पार्क में आयोजित प्रदर्शनी का घाटन प्रमुख समाज सेवी एवं विवेकानन्द समिति के सचिव ता विराज बोस कर रहे हैं।

यह चित्र कुरुक्षेत्र में हुए मानव का भविष्य सम्मेलन के अवसर का है। मंच पर दायें से ब्र० कु० मीठू, ब्र० कु० चन्द्रमणि, मुख्य अति-भाई राम भगतजी, ब्र०कु० बृज मोहनजी और भ्राता आत्मप्रकाश जी बैठे हैं।

श यात्रा पर जाने से पहले आदरणीया दीदी मनमोहिनीजी, ता रमेशशाह तथा ब्र०कु० मोहिनी माऊँट आबू के भाई-बहनों मिल रहे हैं साथ में मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणि जी बैठी

"सुख-शान्ति की तलाश"

ब्रह्माकुमार सूरज कुमार, मधुवन, आबू

पात्र

१. **प्रेम**—बी० ए० तक पढ़ा है

२. **नीना**—प्रेम की धर्म पत्नी, शिक्षित, सुसभ्य, सुन्दर व ऊँचे विचारों वाली नारी

३. **लीला**—नीना की सास—एक कठोर स्वभाव की नारी

४. **शान्ति लाल**—नीना का भाई

५. **लता**—ब्रह्मा कुमारी आश्रम की ज्ञान-योग की शिक्षिका

६. **नीना** की माँ

७. **नीना** की सखी बीना, और नीना की भाभी

८. **सुखदेव**—नीना के पिता—साधारण व्यक्ति

"प्रथम दृश्य"

हाहाकार की आवाज पर्दे के अन्दर से आ रही है...पर्दा खुलता है **प्रेम**, नीना को पीट रहा है, नीना जोर-जोर से रो रही है।

प्रेम—तुम्हारे बाप ने पचास हजार रुपया दहेज देने का वायदा किया था अभी तक नहीं दिया, कैसा झूठा है वो सुखदेव। गरीबी थी तो ऐसे ऊँचे घर में शादी क्यों की। एक मारता है...।

नीना—हाय, भगवान, मुझे बचाओ, इससे तो मैं मर जाती तो अच्छा होता।

लीला—मर जाती...मार दे प्रेम इसे, कैसी कमीनी बहु आई है। सोचा था हमारा घर भर जायेगा। परन्तु न जाने कैसा हमारा भाग्य, बहु क्या आई, अपशुगन सा हो गया।

प्रेम—एक मारता है, जा मर जा ! जा यहाँ से अपने घर। वहाँ से चला जाता है...।

नीना—हाय, मेरी फूटी किस्मत, कहाँ नर्क में आ गई। क्या आज का समाज इतना भूखा है ? क्या मैं इनके घर की शोभा नहीं हूँ...?

(सोच में बैठी आँसू बहा रही है)

कुछ देर बाद फिर प्रेम आता है...

नीना प्रेम को अकेले में प्यार से समझाती है...

नीना—प्रेम, मैंने तुम्हें प्रेम की मूर्ति समझा था, तुम मेरे पति भगवान के समान हो। मैं तुम्हारी हर आज्ञा का पालन करूँगी। तुम्हारे घर की शोभा बढ़ाऊँगी। मेरे माँ-बाप गरीब हैं। आप उन्हें क्षमा कर दें। धन तो क्षण भंगुर है। क्या आप धन को मुझसे भी अधिक महत्व देते हो ?

परन्तु प्रेम पढ़ा लिखा मूर्ख है...

प्रेम—अकल देती है मुझे। हैसियत कम थी तो किसी ग़रीब के घर गई होती। मैं क्या जानूँ तुम्हारे माँ बाप की ग़रीबी को ?

नीना—तो अश्रुधार बहाने लगी

प्रेम—रोती है, भाग यहाँ से, रोकर हमें डराती है ? एक मारता हुआ गुस्से से बाहर निकल जाता है...

नीना—बिस्तर में छुपकर सारी रात रोती है, अपने भाग्य को कोसती है।

अब उसका मन पूरी तरह से उठ चुका था।

पर्दा गिरता है

दूसरा दृश्य

इस प्रकार दुःखी नीना सोचती है—

इस प्रकार दुःखों के काले बादलों के नीचे रहने से क्या लाभ? वह घर पर अपनी पीड़ाओं का एक पत्र लिखती है।

अदरणीय पिता जो—

तेरी नीना दुःख में रोवै
दिन नहीं कटते यहाँ मेरे
आँसू पी पी सोवै
तेरी नीना.....

दहेज के कारण प्रेम मुझे
निशि-दिन डन्डे मारै;
दे दे उलहने सास मेरी
घावों पे नमक बिछावै
तेरी नीना.....

मुझे बुला लो वापिस घर में
यों ही जीवन बिताऊँ,
बस प्रभु की यादों में ही मैं,
रो-रो कर सुख पाऊँ,
नहीं चलेगा यों ये जीवन
पथ में काँटे बिछावैं
तेरी नीना.....

पत्र मिलते ही सुखदेव और शान्ति लाल की आँखें भर आईं। माँ का हृदय रो पड़ा।

सुखदेव—शान्ति बेटा, तेरी बहन नीना, आज इस जहान में दुःख के दिन काट रही है—ये पत्र... आह नीना की तकदीर!

शान्ति लाल—पिता जी, क्या करें?

सुखदेव—बेटा एक बार तो नीना को घर ले आओ। फिर देखेंगे, प्रेम को समझायेंगे। कुछ ले-देकर शान्त करेंगे।

शान्ति लाल—अच्छा पिता जी, मैं नीना के पास जाता हूँ और उसे ले आता हूँ।

शान्ति लाल नीना के घर जाता है।

शान्ति लाल—नमस्ते नीना!

नीना—नमस्ते भाई, मेरा पत्र मिला?

शान्ति लाल—हाँ!

और नीना शान्ति लाल से लिपट कर ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी। लीला शोर सुनकर भागी आई।

लीला—अरे शान्ति, तू इसे ले जा यहाँ से। जब से यह हमारे घर में आई है, इसने अशान्ति कर दी। बहू क्या आई, बला आ गई।

शान्ति लाल—माता जी यह तो आपकी छोटी बेटी है। यह तो बचपन से ही बड़ी सुशील कन्या थी। हमने तो सोचा था कि ऐसी सुसभ्य, घर की शोभा को पाकर आप दहेज की कमी को भूल जायेंगे।

लीला—पर खिलायें कहाँ से इसे, खाती कितना है!

अब नीना से रहा नहीं गया, सोचा—ऐसे जीवन को ठुकरा देना ही अच्छा है।

नीना—माता जी, आज मैं अपने भाई के साथ घर वापिस जाती हूँ देखना, तुम याद किया करोगी मुझे! तुम्हें इतनी भी तम्मीज़ नहीं कि दूर से मेरा भाई तुम्हारे घर में मेहमान बनकर आया है, उससे दो बातें तो प्रेम की करूँ! आग लगे तुम्हारे घर में!! मैं जाती हूँ, देखना तुम रोया करोगी।

चलो शान्ति, इस घर से चलो। ये मानव नहीं दानव हैं। और नीना सब-कुछ छोड़ कर शान्ति के साथ घर चली जाती है। नीना बाप से मिलकर बहुत रोती है और सुखदेव के भी नयन भर आते हैं। अपने आँसुओं को रोकते हुए।

सुखदेव—बेटी नीना तुम रोओ मत। भगवान तुम्हें शान्ति दे। जल्दी ही ये दुःख के बादल हट जायेंगे। हम प्रेम को राजी करेंगे।

नीना—नहीं तात, वो प्रेम नहीं महा मूर्ख है।

आप कर्ज़ लेकर उसे राजी नहीं करना। मैं किसी भी कीमत पर वहाँ नहीं जाऊँगी। मेरे लिए आप जीवन-भर कर्ज़ उतारने में ही लगे रहोगे क्या ?

इन काँटों की दुनिया में मैं, यूं ही जीवन जी लूँगी,
मानव की शान्ति के ख़ातिर, ज़हर के आँसू पी लूँगी।
इन काँटों.....

प्रभु की याद में मीरा-सम मैं, प्रभु को पति बनाऊँ
सुख-दुःख में उसके ही द्वारे, जाकर आश लगाऊँ
खूनी की भूखी दुनिया में मैं, बस यूँ ही जी लूँगी
इन काँटों.....

सुखदेव—बेटी, जीवन की इस लम्बी यात्रा को तुम कैसे तय करोगी? आज तुम्हे दुख-दर्द है, वैराग्य है, परन्तु कल...क्या तुम दूसरों को देख जीवन के प्रति उदास नहीं होओगी।

नीना—मेरे तात—मीरा भी तो जीवन-भर यों ही रही थी, मैं भी रहूँगी। आप मुझे आज्ञा दें, अब मैं प्रेम के घर नहीं जाऊँगी। आप मेरा ये तलाक का पत्र प्रेम को भेज दो।

सुखदेव—बेटी, तुम यह क्या कर रही हो। हमें समाज क्या कहेगा कि बच्ची को दहेज भी न दे सके। मैं कहाँ मुँह दिखाऊँगा समाज में ?

नीना—पिता जी, तो क्यों न मैं मर जाऊँ। कह देना, मर गई, बस सब झंझट छूट जायेंगे। मुझे मरना स्वीकार होगा, मैं ससुराल नर्क घर नहीं जाऊँगी।

सुखदेव—शान्ति, देख नीना क्या कहती है—तलाक, अकेली कैसे रहेगी। जवान लड़की को घर में कैसे रखेंगे ?

शान्ति लाल—पिता जी, नीना क्या करे। उस घर में तो मैं भी नीना को भेजना नहीं चाहता। मैं देख आया हूँ, उन दुष्टों को। नीना का भार मैं अपने कन्धों पर लेता हूँ। जब तक कुछ इन्तज़ाम हो, इसकी ज़िम्मेदारी मेरी। मैं समझूँगा, मेरी एक बहन और है।

सुखदेव—तो आपका क्या विचार है क्या प्रेम को तलाक दे दिया जाए ?

शान्तिलाल—हाँ, यही ठीक होगा।

(तीनों की सहमति से प्रेम को तलाक दे दिया जाता है। नीना प्रेम को अन्तिम पत्र लिखती है)

"मेरी जीवन नैया को मंझधार में ही डाल देने वाले प्रेम—

सत्युग के चक्रवर्ती सूर्यवंशी, महाप्रतापी राजा भी चले गये, सिकन्दर-जैसे महान विश्व-विजेता बनने के सपने देखने वाले भी खाली हाथ चले गये। औरंगजेब जैसे अत्याचारी भी दुख भोगते चले गये, परन्तु ये धन सम्पत्ति किसी के भी साथ नहीं गई। परन्तु मुझे लगता है कि तुम अवश्य ही धन को अपने साथ ले जाओगे।

एक दिन आयेगा, तुम मुझे याद किया करोगे। अपनी माताजी को कह देना कि घर की बला टल गयी, अब घी के दिये जलावे और सुखी जीवन जीये। मैं प्रभु की याद मे सुखी रहूंगी।

अभागिनी नीना

पर्दा गिरता है

"तीसरा दृश्य"

नीना बाप के पास रहने लगी। सुखदेव ने अपनी हैसियत के अनुसार उसे किसी भी प्रकार अभाव नहीं होने दिया। शान्ति लाल का अपनी बहन से बहुत प्रेम था। उन्होने नीना को सुखी रखने के लिये हर प्रकार के साधन जुटाये।

एक दिन शाम को नीना, अपनी सखियों के साथ नदी के किनारे पिकनिक पर गई। परन्तु...

चाँद की बिखरती हुई छटा, शीतल सुगन्धित पवन का स्पर्श और रात्री में छलकता हुआ प्रकृति का सौन्दर्य, नीना के लिए नीरस था। सभी सखी खुश थी, पर नीना उदास...

सखियां नीना को बहला रही हैं। नीना हँसती भी है परन्तु उसके मस्तिष्क की सलवटें नहीं खुलती।

बीना—नीना, तुम पगली हो गई हो। अरे, सुख दुख तो आता ही रहता है। अब तो वे दिन बीत गये। अब बीती बातों को क्यों याद करती हो। जो बीत गया सो पूरा हुआ, अब तो खुशी मना।

नीना—बीना मैं बहुत प्रयास करती हूँ कि सब कुछ भूल जाँऊ, परन्तु न जाने क्यों वही दृश्य रह रह कर मुझे याद आते हैं।

बीना—हाँ, पर भूलो सब। अब जीवन को कोई नया मोड़ दो। सच सच बताओ अपने भविष्य के बारे में आप क्या सोचती हो?

नीना—बीना, तुम तो जानती हो, बचपन से ही मेरे विचारों को। मेरे जीवन की इन घटनाओं ने मानो मेरे विचारों में आग लगा दी। सोचती हूँ अब शादी तो करुगीं नहीं और नारी के उत्थान के लिए कोई सँघर्ष छेड़ दूं।

बीना—परन्तु तुम अकेली, यह कैसे कर सकोगी नीना ? सारा समाज ही दूषित है, कौन सुनता है आज किसी की?

नीना—हाँ, यही तो सोचती हूँ कि कैसे करूं ? मैं यह तो निश्चित कर चुकी हूँ कि शादी तो अब नहीं करूंगी। किसी भी तरह समाज-सुधार के कार्य में ही लग जाऊँ।

बीना—परन्तु लोग कहते हैं कि इस संसार में अकेले रहना, बड़ा कठिन काम है। जीवन में कोई साथी तो चाहिए ही।

नीना—परन्तु साथी अगर दानव बन जाए तो कौन क्या करे। बस अब तो मेरा लक्ष्य है मीरा की तरह श्री कृष्ण को ही अपना प्रियतम बना लूँ और उसी की तरह जीवन बिताऊँ।

बीना—क्या सचमुच ? तुम्हारे विचार बड़े ऊँचे हैं।

नीना—हाँ मैं तो रोज़ मन्दिर जाती हूं। वहीं थोड़ी शान्ति मिलती है। आज आप भी मेरे साथ मन्दिर चलो। देखो मन्दिर का समय हो रहा है।

बीना—हाँ, हाँ क्यों नहीं ? में भी मन्दिर जाया करती हूँ।

सभी सखियाँ, श्री कृष्ण के मन्दिर में जाती हैं।

नीना गीत गाती है—

मेरे तो गिरधर गोपाल...मेरे तो गिरधर गोपाल...
तुम मेर प्रियतम···तुम ही जीवन,
दर्द मिटाओ नन्द लाल...मेरे तो...
मीरा के दूर किये थे, नरसिहं भरो भात।
तुम दुख-भंजन, नीना-रक्षक, कृपा करो ब्रजलाल,
मेरे तो...
आश बन्धाई, तुझ पर मैंने, खुशियाँ मनाई आज
टूटे ना दिल, अब दुखिया का दर्शन, दो जगपाल मेरे···

नीना को बड़ी शान्ति महसूस हुई·····परन्तु बादल अभी भी भरा है, न जाने कब बरसेगा और हल्का होगा।

नीना मन्दिर से लौटती है·····

"चौथा दृश्य"

नीना की भाभी नाराज़ नज़र आ रही है, वह शान्ति लाल को कह रही है।

भाभी—तुम तो बस नीना की खुशी में ही खुश रहते हो। मुझे तो देखते भी नहीं...न जाने कब जायेगी ये नीना !

शान्तिलाल—ऐसा मत कहो। उसका दुःख अगर हम नहीं बाँटेंगे, तो उसका और है कौन ? फिर कभी ऐसा शब्द मुख से न निकालना उसे कुछ भी कहा तो ठीक नहीं होगा।

भाभी—बस, नीना ही नीना, प्यार है तो शादी क्यों नहीं कर देते ?

(नीना—बाहर खड़ी ये सुन रही थी)

नीना के दिल पर मानो पहाड़ टूट गया। भाभी की ऐसी भावनाएँ देखकर उसके नयन भर आये। उसकी खुशी लोप हो गई। नीना ने अन्दर प्रवेश किया।

नीना—भाभी, लो भगवान का प्रसाद लाई हूँ।

भाभी—तू ही खा, राज़ी कर अपने भगवान को!

इस अभद्र व्यवहार ने नीना के मन पर भारी चोट की। वह जाकर खाट पर लेट गई। उसकी क्षणिक खुशी फिर समाप्त हो गई। अतीत की यादें फिर उसे दुःखों के भीषण अन्धाकर में खींच ले गईं। सिसकियाँ भरने लगी। आवाज़ बाहर गई! आवाज़ सुनकर सुखदेव दौड़ा आया।

सुखदेव—कौन, बेटी नीना?

उससे भी रहा न गया, नयन भर आये।

सुखदेव नीना को पुचकारता है। धैर्य देता है। बेटी नोना, तुम्हारी शादी की बात चल रही है। जल्दी ही एक अच्छे घर में तुम सुख से रहोगी। तुम रोओ मत, मेरी बेटी। मेरा दिल तुम्हारा दुःख सहन नहीं कर सकता।

नीना—पिता जी, मैं शादी नहीं कराऊँगी।

सुखदेव—तब बेटी क्या यों ही दुःख में जीवन बिताओगी। हे भगवान! नीना को सद्‌बुद्धि दे। इसका दुःख मुझे दे दो। मेरी बेटी खुशियों के झूले में झूले।

नीना—पिताजी, मैं जल्दी ही अपना रास्ता ढूंढ़ लूंगी। मैं आपको अब ज़्यादा कष्ट नहीं दूंगी।

इस प्रकार सारी रात नीना को नींद नहीं आई!

नीना—(स्वयं से) अब तो शान्ति का एक ही रास्ता है। इस जीवन-लीला को सदा के लिए समाप्त कर दूं।

परन्तु पीछे, मुझे प्राणों से भी ज़्यादा प्यार करने वाले पिताजी व माताजी का क्या होगा? क्या वे रो-रोकर नहीं मर जायेंगे?

इसी प्रकार दिन बीतते गये, व्यथा बढ़ती गई। नीना स्वयं को काफी खुश करने का प्रयास करती थी, परन्तु रात्री को मन में फिर वही जीवन-लीला को समाप्त करने के विचार तेजी से आते थे।

नीना—सिवाय आत्म घात के अब कोई रास्ता नहीं···परन्तु क्या मैं ऐसा कर सकूँगी?···बड़े साहस का काम है।

समाज की दृष्टि और भाभी के व्यवहार ने नीना के दुख में प्रतिदिन चिंगारी लगाई। वह खुद को बहुत समझाती थी। आखिर एक दिन—

वह इन्हीं विचारों में सो गई। ठीक प्रातः ४ बजे उसकी आँख खुली। आसमान में चाँद अपनी चाँदनी बिखेर रहा था। प्रकृति शान्त थी, आज नीना का मन भी शान्त था। सभी सोये थे, वह अपने प्यारे पिता पर दृष्टि डालकर धीरे से बाहर निकली।

आज उसके कदम धीरे-धीरे रेल की पटरी की ओर चलने लगे इस जीवन से दुःख व अशान्ति की निवृत्ति के लिए।

नीना—गाड़ी ४·३० पर आयेगी···बस···बस···

नीना खुश हुई, आज सभी झंझटों से छूट जायेगी···

वह धीरे-धीरे जा रही है···नयन भरे हैं···

गीत के बोल उसके कानों में गूँजने लगे···

जीवन बड़ा अमोल है पगले,
क्यूँ तू इसे गँवाये,
पल-पल में तू प्रभु-गुण गा ले
क्यूँ मन में दुःख पाये···

जीवन के सुख-दुःख ये प्राणी, सब है खेल तमाशा
राहों में कभी आये आशा, और कभी निराशा
आज है दुःख कल सुख आयेगा, मनवा क्यों घबराये,
ज़ीवन बड़ा·····

ये दुःख और आँसू आँचल के, दे दे प्रभु को सारे
वो ही जीवन सुखी बनाये, बिगड़े काज सँवारे
उसके दर पर जाकर प्राणी, मन की प्यास बुझाये

जीवन बड़ा·····

(नीना जा रही है।)

"पर्दा गिरता है"

"पाँचवाँ दृश्य"

नीना के कदम धीरे-धीरे बढ़ रहे हैं। उसे एक अजीब-सी शान्ति महसूस हो रही है। आज वह सब-कुछ भूल चुकी है।

अचानक ही उसका ध्यान खिंच गया—

ऊपर की ओर एक बड़े कमरे में लाल प्रकाश··· मानो चारों ओर सुख बिखेर रहा हो।

गीत के बोल उसके मन को चैन देने लगे—

बाबा, तेरा बनने में सुख मिलता इलाही है
खुशियों से भरा जीवन, हर पल में कमाई है।
तेरी छत्र छाया में, माया की धूप नहीं,
जो तेरा बन जाए, उसे कोई भी भूख नहीं,
एक तेरे मिलने से, मिली सारी खुदाई है।
बाबा तेरा·····

जिसे निश्चय हो तेरा, उसे कोई सोच नहीं,
जिसे बल हो तेरा, उसे दुनिया की रोक नहीं,
जिसने तुझे अपनाया, उसे दुनिया पराई है।
बाबा तेरा·····

नीना—ये क्या है ?

बोर्ड की ओर—"प्रजापिता ब्रह्माकुमारी, ईश्वरीय विश्व-विद्यालय" कहीं नाम तो सुना था। यहाँ श्वेत वस्त्रों वाली बहनें रहती हैं। पता नहीं क्या उपदेश करती हैं···चलूं देखूं तो सही।

(नीना दो कदम आगे बढ़ी परन्तु रुक गई।)

(उसे याद आया तू तो जीवन-लीला समाप्त करने जा रही है, फिर कहाँ चल दी ? क्या और दुःखी जीवन के क्षण देखने को मन चाहता है ? क्या दुःखों से मन नहीं भरा ?)

नीना वापिस जाना चाहती है। परन्तु कोई शक्ति उसे रोक लेती है···

नीना – चलो अच्छा, जीवन-लीला समाप्त करने से पहले एक बार इसे भी देख लूं···बाकी मैं तो अन्तिम निर्णय ले चुकी हूँ। नीना ज्यों-ज्यों आगे बढ़ी, उसके मन में खुशी की लहर आने लगी।

नीना—न जाने कैसी खुशी हो रही है मुझे ?

झिझकती हुई नीना आगे बढ़ी तो ब्रह्माकुमारी लता की नज़र नीना पर पड़ी।

ब्र० कु० लता—कौन बहन, क्या आप पहली ही बार यहाँ आ रही हो ?

नीना—हाँ पहली बार और जीवन में अन्तिम बार।

ब्र० कु० लता—क्यों अन्तिम बार क्यों ! रोज़ आना, यह तो सर्व के परमपिता का घर अर्थात् आपका अपना घर है। आइये बैठिये; कहिए इतने सबेरे कैसे आना हुआ ?

नीना के नयन भर आये, वह कुछ बोल न सकी।

लता—बोलो क्या नाम है तुम्हारा ?

नीना—मैं अभागिनी नीना हूँ। दुःखों का पहाड़ ढोती-ढोती, जीवन में परेशान होकर जीवन-लीला समाप्त करने जा रही थी। न जाने कौन-सी शक्ति मुझे यहाँ खींच लाई। यह कहकर नीना ऐसे मुरझाई-सी बैठ गई मानो सारे विश्व का दुख उसने ही झेला हो।

लता—जीवघात !!! नीना, भगवान तो सभी को जीवन दान देने आये हैं और तुम जीवन का अन्त करना चाहती हो ?

नीना—हाँ, बस शान्ति का यही एक रास्ता रह गया है। जब से मेरी शादी हुई, मैंने जीवन में दुःख-ही-दुःख देखे। नयन बहाते नीना ने अपनी सारी दुःख भरी कहानी कह दी।

लता—नीना ये सुख-दुःख तो खेल है। मनुष्य के अपने ही बोये हुए कर्मों का फल है। हमने ही ये कर्मों का बीज खुशी-खुशी से बोया था, हमें ही ये फल खुशी-खुशी से खाना होगा। दुःखों के अन्त का साधन ये जीवघात नहीं, ये तो और ही अपने पाप कर्मों की खेती में मानो खाद डालना है। इससे भावी जीवन और ही अशान्त होंगे।

नीना—परन्तु करें भी क्या ?

लता—इस समय परमात्मा ने सुख शान्ति का मार्ग दिखा दिया है और अपने पाप कर्मों को नष्ट

करने सुखद सुनहरा भविष्य बनाने के लिए राजयोग भी सिखाया है। उसके द्वारा ही मनुष्य का ये जीवन सुखी हो सकता है।

यहाँ पर कई दुःखी अशान्त आत्माएँ आती हैं और ज्ञान व योग सीखकर जीवन को सुखी बनाकर जाती हैं।

नीना—तो क्या आप मेरी-जैसी दुःखी नारी को भी स्वीकार करेंगी ?

लता—अब आप दुःखी नहीं, सुख के सागर शिव बाबा की प्यारी बच्ची नीना हो। तुम्हारे दुःख के दिन पूरे हुए। तुम ठीक स्थान पर पहुँच गई हो, अपने प्यारे शिव बाबा की गोद में आ गई हो। अब ज्ञान योग सीखो और अनेक दुःखी आत्माओं को शान्ति दो।

(नीना ने सुख की साँस ली। वह भूल गई कि वह जीवन-लीला को समाप्त करने जा रही थी।)

नीना—तो अब मैं क्या करूँ ?

लता—सामने ही हाल में योग-अभ्यास चल रहा है आप वहाँ बैठो और अभ्यास करो—

मैं इस देह से भिन्न एक चेतन आत्मा हूँ···
मैं शान्त हूँ···शान्तस्वरूप···पवित्र स्वरूप हूँ···
शान्ति मेरा स्वधर्म है···
मैं सुख के सागर परमात्मा की बच्ची, सुख-स्वरूप हूँ···

नीना योग कक्ष में जा बैठी शान्त वातावरण में उसका मन भी शान्त हो गया···जैसे कि उसने कभी दुःख देखा ही न हो। उसे जीवन के मूल्य का आभास होने लगा।

योग के बाद नीना लता से मिली—

लता—कहो नीना बहन, कैसा लगा आपको ?

नीना—बहन, मुझे आज सब-कुछ मिल गया। मैंने सही मार्ग पा लिया आज संसार में नारी जीवन बड़ा दुःखी है। मुझे उसका हल मिल गया।

लता—हाँ नीना, भगवान स्वयं इस धरा पर आकर मातृ शक्ति का विशेष रूप से उत्थान कर रहे हैं। भारत की नारी अब जागी है और वह ही सम्पूर्ण विश्व को दुःखों से मुक्त करेगी।

नीना—बहन जी, क्या मैं भी आपकी तरह जीवन को ऊँचा बना सकती हूँ।

लता—हाँ क्यों नहीं, जीवन की सार्थकता ही जीवन को ईश्वरीय सेवा में लगाने में है।

नीना—तो अब मैं क्या करूँ ?

लता—पहले कुछ दिन आकर इन ज्ञान योग की बातों को अच्छी तरह जानो, फिर अपने भावी जीवन के बारे में योजना बनाना।

नीना—अच्छा बहन जी नमस्ते, मैं कल फिर आऊँगी।

लता—अवश्य।

(नीना घर जाती है।)

आज उसके चेहरे पर खुशी। मन शान्त है।

सुखदेव—क्यों नीना आज बड़ी खुश है, कहाँ गई थी ? हम तो तुम्हें बहुत देर से ढूँढ रहे थे।

नीना—पिताजी, आज से आपकी समस्या हल हो गई।

सुखदेव—मेरी समस्या।

नीना—हाँ, आज मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम में गई थी। बस मुझे वहाँ शान्ति का रास्ता मिल गया।

सुखदेव—क्या ब्रह्माकुमारियों के पास ? वहाँ जाने को तुम्हें किसने कहा, उनके बारे में तो लोग बड़ी अजीब बातें बोलते हैं।

नीना—लोगों की क्या बातें ? अच्छे व्यक्तियों को परेशान करना, सज्जनों को कष्ट देना, यही तो कलियुगी भ्रष्ट लोगों का काम है।

पिताजी, ब्रह्माकुमारियाँ तो देवियाँ हैं। सचमुच वो मानव-उत्थान के लिए अवतरित शक्तियाँ हैं। उन्होंने सत्य को पाया है।

सुखदेव—परन्तु मैं आपको वहाँ जाने की इजाजत नहीं दूँगा।

नीना—तो मुझे जीवन समाप्त करने की इजाजत दीजिए।

सुखदेव—क्यों ?

नीना—आज सबेरे ४ बजे मैं जीव-हत्या करने जा रही थी। इस समय आप मेरी लाश ही पाते। परन्तु मैं आपके सम्मुख खुशी में खड़ी हूँ यह ब्रह्माकुमारियों की ही कृपा है।

सुखदेव—(नयनों में आँसू)—ओह, मेरी नीना, तो फिर क्या हुआ ?

नीना—न जाने कौन-सी शक्ति मुझे ब्रह्माकुमारी आश्रम में ले गई और वहाँ मिला मुझे सुखी जीवन जीने का सत्पथ। अब मुझे आज्ञा दो। बस अब तो वही मेरा जीवन है।

सुखदेव—नीना की मम्मी ?

मम्मी—हाँ, क्या है, नीना कहाँ है ?

सुखदेव—ये आ गई, देख कहती है मैं तो ब्रह्माकुमारी बनूँगी।

मम्मी—ना बेटी, तुम अपने घर ही राजी रहो, तुम कहीं न जाओ।

नीना—मम्मी मैंने सत्य को पा लिया, अब मुझे आज्ञा दें।

सुखदेव—अच्छा बेटी नीना, हम तो तुम्हारी खुशी में खुश हैं। रोज़ जाओ भगवान तुम्हें सुख प्रदान करे। अपनी मम्मी को भी साथ ले जाना।

मम्मी—हाँ, मैं भी जाकर देखूँ तो तुम कहाँ गई थी।

नीना—मम्मी वहाँ जाकर मुझे ऐसा लगा था कि मैं स्वर्ग में, किसी परियों के देश में आ गई हूँ और मैंने निश्चय कर लिया—

मम्मी, मैं तो ब्रह्माकुमारी बनूँगी।
दुनिया में बहती है पापों की धारा,
जाकर मैं पावन करूँगी।
मम्मी मैं·····

तूफानों में उलझी है मानव की नैया,
जा मैं पतवार बनूँगी।
मम्मी मैं·····

जग ने ठुकराया नारी को, कुचल-कुचल तड़पाया,
जाकर मैं सिंह नाद करूँगी।
मम्मी मैं·····

अन्धकार में भटकी रूहें, माया में है दुःख पाती,
जाकर मैं प्रकाश करूँगी।
मम्मी मैं·····

नर को जाकर पहनाऊँगी, मानवता का कहना,
गुणों का मैं शृंगार करूँगी।
मम्मी मैं·····
दुनिया में·····

नीना प्रतिदिन ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाने लगी। लगभग ६ मास से अधिक समय हो गया। अब वह ज्ञान योग में प्रवीण हो चुकी थी। उसने अपना अन्तिम निर्णय कर लिया था कि मैं ब्रह्माकुमारियों की तरह ही अपने जीवन को ईश्वरीय सेवा के लिए शिव बाबा पर समर्पण कर दूँ।

एक दिन—

नीना—पिताजी अब मेरी अन्तिम इच्छा पूर्ण करो।

सुखदेव—अवश्य बेटी, जब से तुम ब्रह्माकुमारी आश्रम पर जाने लगी हो घर में खुशी ही खुशी छा गई।

नीना—पिताजी, इस संसार में मेरी ही तरह अनेक नारियों का जीवन व्यथा में रोता होगा। अब उन्हें शान्ति का मार्ग बताना मेरा ही काम है। अनेक अबलाओं की दुःख की पुकार मेरे कानों में गूँज रही है।

सुखदेव—बोलो नीना तुम्हारी क्या इच्छा है ? तुम तो बहुत ही ज्ञान-वान बन गई हो। तुम मुझे भी एक दिन आश्रम पर ले चलो।

नीना—हाँ, आप वहाँ चलें और देख कि कैसे वहाँ भगवान का कार्य चल रहा है और मुझे प्रभु को अर्पण कर दीजिए, पिताजी।

(शेष पृष्ट २३ पर)

बिलासपुर की खुली जेल में कैदियों को ब्र० कु० इन्द्रा राखी बांध रही हैं।

भरुच में आयोजित डाक्टर्स योग-शिविर का उद्घाटन ब्र० कु० सरला जी तथा वहाँ के सिविल अस्पताल के सिविल सर्जन दीप जलाकर कर रहे हैं। वहाँ के बहन-भाई साथ में खड़े हैं।

विसनगर (गुजरात) में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ की महिला कालेज के प्रधानाचार्य दीप जला कर कर रहे हैं।

बोकारो स्टील सिटी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी देखने के पश्चात् मुख्य अतिथि एस० एस० पी० वर्मा अपने विचार प्रकट कर रहे हैं। ब्र० कु० सुमित्रा व अन्य भाई-बहनें मंच पर बैठे हैं।

दाण्डेली में मनाये गये आध्यात्मिक समारोह में ब्र० कु० शारदा प्रवचन कर रही हैं। मच पर श्रीदेवी बहन, भारती बहन तथा मुख्य अतिथि भ्राता गोपेश्वर जी सोडानी बैठे हैं।

मेरठ सेवा-केन्द्र द्वारा कंकरखेड़ा में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन कर्नल एच०एस० पन्नु जी कर रहे हैं। उनके निकट उनकी धर्मपत्नी तथा ब्र०कु० कमलसुन्दरी, विनोद, विमलाजी आदि खड़े हैं।

अमलनेर उप सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित कार्यक्रम में वहाँ के कालेज के प्रधानाचार्य भ्राता के० जेड० लाडली प्रवचन कर रहे हैं। साथ में मंच पर सुरेखा व अन्य भाई बैठे हैं।

बहादुरगढ़ में आयोजित चरित्र प्रदर्शनी में वहाँ के सेवा केन्द्र के भाई-बहनों के बीच वकील आनन्द गुप्ता व उनकी युगल दिखाई दे रहे हैं।

जालन्धर छावनी में सैनिकों के सम्मुख ब्र० कु० कृष्णा जी प्रवचन कर रही हैं।

नेपाल (काठमण्डु) में लगाई गई प्रदर्शनी को देखने वहां की शहजादी शान्तिसिंह व शहजादा दीपक जंग सिंह भी पधारे थे। चित्र में ब्र०कु० राज शहजादी को बैज लगा रही हैं।

जन्माष्टमी के पर्व पर आयोजित कार्यक्रम में ब्र० कु० सुषमा संस्कृत कालेज के प्रिंसिपल को श्रीकृष्ण का चित्र भेंट कर रही हैं।

लुधियाना में दशहरे पर आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन रामलीला कमेटी के प्रधान भ्राता ओमप्रकाश गुप्ता मोमबत्ती जलाकर कर रहे हैं।

राजौरी गार्डन (नई दिल्ली) सेवा केन्द्र की ओर से विकलाँग उत्पादन केन्द्र (रमेश नगर) में आयोजित कार्यक्रम के पश्चात् ब्रह्माकुमारी बहनें विकलाँगों के बीच दिखाई दे रही हैं।

मलकापुर में आयोजित प्रदर्शनी को देखने के पश्चात् वहाँ के एस० डी० ओ०अपना अभिप्राय लिख रहे है। साथ में प्रसिद्ध व्यापारीगण बैठे हैं।

जमकण्डी (कर्नाटक) में आयोजित कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारी बहनें प्रवचन कर रही हैं तथा वहाँ के प्रमुख व्यक्ति मंच पर बैठे हैं।

बोकारो में कल्व में जन्माष्टमी के समय की गई प्रदर्शनी का उद्घाटनकोआपरेटिव कालोनी के सेक्टरी तथा लायन्स कल्व के प्रेजीडैन्ट एस० एस० पी० वर्मा दीपक जलाकर कर रहे हैं। पास में ब्र० कु० कुसम, ब्र० कु० सीता, सुमित्रा तथा अन्य भाई-बहन खड़े है।

बंगलौर में जन्माष्टमी पर आयोजित कार्यक्रम में कर्नाटक कन्जूमर कोओपरेटिव सोसाईटी की अध्यक्षा बहन जाजी मण्डन्ता को ब्र० कु० हृदय पुष्पा श्रीकृष्ण का चित्र भेंट कर रही हैं।

सोडेपुर (कलकत्ता)कल्व में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन ब्र०कु० निर्मल शान्ता जी कर रही हैं। साथ में कमेटी के प्रधान व अन्य व्यक्ति खड़े हैं।

करनाल के गवर्नमैन्ट कालेज के छात्रों को ब्र० कु० पुष्पा जी सम्बोधित कर रही हैं। साथ में ब्र० कु० लक्ष्मी व आशा बैठी हैं।

फरीदकोट सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध समाज सेवी भ्राता मेहरचन्द कर रहे हैं।

घाटकोपर (बम्बई) सेवा केन्द्र द्वारा आयोजित प्रदर्शनी के चित्रों की व्याख्या वहाँ के एम० एल० ए० भ्राता लीलाधर व्यास को ब्र० कु० इन्दिरा जी कर रही हैं।

लखनऊ (पेपर मिल कालोनी) में आयोजित कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश के मंत्री भ्राता विजयकुमार त्रिपाठी प्रवचन कर रहे हैं।

जूनागढ़ सेवा केन्द्र की ओर से आयोजित समारोह में घोराणी नगर पंचायत के प्रमुख प्रवचन कर रहे हैं। साथ में मुख्य अतिथि भ्राता छगन भाई बैठे हैं।

(पृष्ट १८ का शेष)

सुखदेव—मैं आपकी गहरी बातों को समझ नहीं सका, बेटी।

नीना—मैं चाहती हूँ कि मैं भी ब्रह्माकुमारी बहनों की तरह आश्रम में रहने लगूँ। ताकि भगवान का ज्ञान सारे विश्व में दे सकूँ।

सुखदेव—अवश्य बेटी।

"पर्दा गिरता है।"

"छटा दृश्य"

सभा लगी है, मंच पर ब्रह्माकुमारी लता, नीना, सुखदेव व ब्रह्माकुमारी आश्रम के एक भाई बैठे हैं।

शहर में पर्चे बंटवाये गए हैं—'अलौकिक समर्पण समारोह' का निमन्त्रण। एक पर्चा प्रेम को भी मिला।

ब्रह्माकुमारी लता—हर्ष का विषय है कि आज भारत की नारियाँ जागी हैं। उनमें मानव कल्याण की तीव्र भावना आई है। भगवान इस समय जबकि खुद आकर सत्य ज्ञान दे रहे हैं तो मनुष्य का कर्त्तव्य है कि उसका पूरा-पूरा लाभ उठावे।

आज का दिन कितना सुहावना है कि हमारी प्यारी बहन नीना के सर्वआत्मिक सम्बन्ध भगवान से होने जा रही है। लौकिक शादी तो दुःख दाई बन गई हैं, परन्तु स्वयं निराकार भगवान से नाता—कितना मनोरम दृश्य है। शिव बाबा भी इस दृश्य को देखकर ऊपर से पुष्पों की वर्षा कर रहे हैं।

सुखदेव—मेरे जीवन में आज सबसे ज्यादा खुशी है। नीना तीन-चार वर्ष से बहुत दुःखी थी। आज उसके जीवन में खुशियाँ ही खुशियाँ हैं। मैंने ब्रह्माकुमारियों के जीवन को, इनके ज्ञान को व इनकी सेवाओं को अच्छी तरह देखा है। मैं आज अपनी कन्या नीना को परमात्मा को अर्पण करता हूँ। मुझे इससे बढ़कर और क्या खुशी होगी! मुझे विश्वास है कि नीना अब सुख का जीवन जियेगी और बहुतों को सुख का मार्ग दिखायेगी। मैं उसकी सफलता की कामना करता हूँ।

ब्रह्माकुमारी लता—अब मैं नीना से आग्रह करती हूँ कि वह अपना सत्य अनुभव सुनाए और बताए कि वह अपना जीवन ब्रह्माकुमारी आश्रम में क्यों अर्पित कर रही है?

नीना—जब मैं याद करती हूँ अपना ५-६ वर्ष पुराना जीवन तो मन रो पड़ता है। ओह, मनुष्य की निर्दयता और नीचता। आज तो मैं खुशियों के झूले में झूल रही हूँ। परन्तु आज संक्षेप में अपने दुःखों की कहानी आप से कहती हूँ।

अब से ८ वर्ष पूर्व मेरी शादी एक अच्छे घर में हो गई थी। परन्तु मेरे घर वाले गरीब होने के कारण पर्याप्त दहेज न दे सके। फलस्वरूप मेरे पति व सास के जुल्म मुझ पर ढाये जाने लगे। रोज़ मार पड़ती, ताने सुनती और मैं दुःख के आँसू पीकर रह जाती। यही क्रम ३ वर्ष तक चलता रहा। मेरा जीवन बहुत अशान्त हो चुका था। मैंने अपने पिताजी को एक दुःख भरा पत्र लिखा और ये भी मेरा दुःख देख न सके।

मेरा मन संसार से उठ चुका था, मैं मायके चली आई और पति को छोड़ दिया। मैंने श्री कृष्ण की बहुत भक्ति की परन्तु दुःख और अशान्ति का प्रवाह दिनोंदिन बढ़ता गया। आखिर मनुष्य क्या करता।

मैं दुःख सहन नहीं कर सकी और अब से लगभग ८ मास पूर्व मैंने जीवन समाप्त की योजना बनाई। मैं सबेरे ४ बजे रेल की पटरी की ओर बढ़ रही थी कि इस आश्रम का लाल प्रकाश मुझे यहाँ खींच लाया।

यहाँ मैंने ज्ञान-योग का अभ्यास किया और अब मुझे अपने जीवन को प्रभु पर अर्पित करते अति हर्ष हो रहा है। मैं आजीवन पवित्र रहने की प्रतिज्ञा करती हूँ और आह्वान करती हूँ कि भारत की असहाय और दुखी नारी ब्रह्माकुमारी आश्रम की शरण लें।

नीना का अनुभव सुनकर सभा में सन्नाटा छा गया। और एक युवक उसी सन्नाटे से निकल कर

मंच की ओर बढ़ा और नीना के चरणों में गिरकर सिसक-सिसक कर रोने लगा।

सुखदेव ने उसे प्रेम पहचान कर उठाया और कुर्सी पर बैठाया। प्रेम ने माइक पर बोला—

मैं आज इस सभा में नीना से क्षमा चाहता। मैं वही प्रेम हूँ जिसने नीना को दहेज के कारण तंग किया था। मैंने अपने जीवन में अपने कर्मों का पर्याप्त फल पा लिया। मेरी दूसरी शादी हुई, बहुत दहेज आया, पर मेरी पत्नि इतनी तेज निकली कि उसने सारे परिवार को परेशान कर दिया। आखिर मुझे उसे तलाक देना पड़ा।

मुझे नीना की बहुत याद आती थी और इनका लिखा अन्तिम पत्र मुझे बार-बार रुलाता था। मुझे क्षमा करो, नीना। तुम साक्षात् देवी हो। मेरा जीवन बहुत अशान्त हो चुका है, मुझे राह दिखाओ।

नीना—बलिहार तुम्हारे कष्टों की जो मुझे भगवान मिला दिए, यह तो खेल है प्रेम। किसी का कोई दोष नहीं अब परमात्मा सभी के दुःख हरने आया है, उससे सम्बन्ध जोड़कर अपने जीवन को सुखी बनाओ।

सभी नीना पर फूलों की वर्षा करते हैं और गीत बजता है·····

योगी बनो, ज्ञानी बनो, योगी जीवन है प्यारा···
काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह वश आज है सब मोह ताज,
योग लगाकर पाप मिटा ले, स्वर्ग सजा ले तू आज,
जन्म-जन्म की प्यास मिटा ले, पावन बनकर आज।
योगी बनो·····

परम धाम से आए हैं शिव ब्रह्मा तन आधार,
मुक्ति और जीवन्मुक्ति का जन्म सिद्ध अधिकार,
चलना है, घर वापिस अब तो यही ज्ञान का सार।
योगी बनो·····

(पर्दा गिरता है।)

—:०:—

कविता

खुदा दोस्त

ब्रह्माकुमार आत्मप्रकाश, मधुबन, आबू

जिस दिन से खुदा बने दोस्त हमारे
मन में खुशियों के दीप जले
परछाईं ग़म की हट गई
जीवन के मुरझे फूल खिले
गर्मी का सूरज अस्त हुआ
चन्दा-सी शीतलता आई,
रिमझिम-रिमझिम-सी ज्ञान बूंद
हँसों की महफ़िल भर लाई,
मन सुख सपनों में नाच उठा
तारों से झिलमिल रूप खिले।
जिस दिन·····
राहों के काँटे फूल बने
मुरली की तान चैन लाई
सुख शान्ति गले का हार बनी
पथ की थक ठहर नहीं पाई,
क्षण में दुःख का जग भस्म हुआ
जीवन से विघ्न के जाल ढले।
जिस दिन·····
मन की दुविधा कह कर तुमसे
मन सब पापों से मुक्त हुआ,
हमें सखा प्रेम से लिप्त किया
भय दूर किया दुर्बल मन का,
चिन्ता की चिन्ताएँ भस्म हुई
रावण दुश्मन के पोल खुले।
जिस दिन से खुदा बने दोस्त हमारे

शक ! शक !! शक्की

ब्र० कु० सुरेन्द्र कुमार नीमच

उन दिनों को मैं जानता हूँ। वे बहुत गहरे मित्र थे। उनके बीच बहुत ही मधुर सम्बंध थे और वे एक-दूसरे को अपना पूरक समझते थे। लेकिन फिर उनके बीच खड़ी हुई शक़ की एक अभेद्य और स्याह दीवार जो बढ़ती चली गई...बढ़ती चली गई...वे एक दूसरे से कटने लगे ..ऊपर से अभिवादन करते लेकिन दिल में शक़ !शक़ ! !और आज वो दीवार इतनी ऊचीं उठ गई कि वे दोनों एक दूसरे को देख पाने में भी असमर्थ हैं दोनों अलग-अलग राह पर चल पड़े हैं लेकिन फिर भी दिल में एक कशिश है एक-दूसरे के प्रति, एक शुभ भावना है, एक शुभकामना है एक दूसरे के प्रति लेकिन...

तो ये शक ही था जिसने उनकी मित्रता की गहराई को समाप्त कर गहरी खाई उत्पन्न कर दी थी, उनके मधुर सम्बन्धों को नफ़रत में बदल डाला था और जो एक-दूसरे के पूरक थे, आज भी हैं लेकिन...शक्की पूरक !

तो ये शक ही था...क्या इसमें शक़ है ? इस शक़ ने ही उन दोनों की मित्रता को आग लगा दी थी। अगर वे चाहते तो आपस में चर्चा करके, अपने मनोभावों को शंका में न बदल कर उसको खुलकर एक-दूसरे के समक्ष रखकर शंका का समाधान कर सकते थे, लेकिन उन्होने ऐसा शायद इसलिए नहीं किया कि शक़ आख़िर शक़ था विश्वास नहीं। खैर !

तो मैं उस शक़ की चर्चा कर रहा था दोस्ती को दुश्मनी में बदल देता है, प्यार को नफ़रत में बदल देता है और मधुरता की परिणिती कटुता में कर देता है। कितनी ख़तरनाक बीमारी है ये शक़! जिसमें इन्सान स्वयं भी अशान्त होता है और सम्पर्क में आने वालों की भी शान्ति भंग करने का कारण बनता है और जिसका निवारण भी अपनी पूर्वावस्था को पुनः नहीं ला सकता है। कहावत भी है कि हर बिमारी का इलाज़ है लेकिन शक़ लाईलाज़ है' और ये लाईलाज़ बीमारी इतनी तेजी से फैल रही है कि वर्तमान समय में प्रत्येक व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में इस बीमारी से ग्रसित है, इसलिए यदि हम इस 'शक़' रूपी भूत को सर्वव्यापी (Omnipresent) कहें तो अतशियोक्ति न होगी। क्योंकि शक़ आज हर मनुष्य मात्र की ज़िन्दगी में समा चुका है, बात चाहे छोटी या बड़ी, इन्सान चाहे अपना हो या पराया प्रत्येक को शंका की नजर से देखना मनुष्य का स्वभाव बनता जा रहा है। वास्तव में ये 'शक़' क्या है? "शक़ किसी भी व्यक्ति से अज्ञात संभावित ख़तरे का भय है जो व्यक्ति को आकुल कर देता है" आप शायद शक़ और भय को एक ही अर्थ में समझते हों किन्तु वास्तव में दोनों अलग-अलग मनोवृत्तियाँ हैं। भय के समय तो मनुष्य को उसका स्पष्ट कारण मालूम होता है जैसे सड़क पार करने में, तैरने आदि में भय की भावना का स्पष्ट कारण है। जब कि 'शक़' में आने वाले संभावित खतरे के भय की भावना होते हुए भी हम उसका साफ-साफ कारण नहीं जान पाते हैं लेकिन फिर भी 'शक़' के जाल में हम फंस जाते हैं और यकीन नहीं होने के अभाव में उसे व्यक्त नहीं कर पाते हैं। इसलिए 'शक़' शंकाल के जीवन में एक अन्तर्द्वन्द्व छेड़ देता जिसका परिणाम सदैव बुरा होता है और मनुष्य पतन के गर्त में गिरता चला जाता है।

शक़ का कारण

आधुनिक समाज में मनुष्य को जिस सामाजिक, आर्थिक और राजनितिक परिस्थितियों से गुजरना पड़ता है उससे 'शक़' की जड़ें फैलती जा रही हैं जिसके फलस्वरूप वह हमेशा मानसिक तनाव महसूस करता है। मानसिक अव्यवस्था और शारीरिक लक्षणों के

साथ-साथ उसका अन्तर्मन भी खंडित हो जाता है तो है न कितनी खतरनाक बीमारी ? आखिर इस बीमारी का कारण क्या हो सकता है ? इसका प्रमुख कारण है मनुष्य की आत्मस्थापन की भावना को ठेस पहुँचना। जब वह दो बाते सोचने लगता है कि कहीं वो मेरे लिए ऐसा तो नहीं सोचता ? कहीं वो दोस्ती की आड़ में अपनी रोटी नहीं सेक रहा ? शायद वो मुझे बेवकूफ बना रहा है ? हो सकता है कि वो मुझे धोखा दे जाय ? तो कहीं शायद !, हो सकता है ! ऐसे-ऐसे शब्द शंकाएं उत्पन्न करते हैं, जिसके पीछे मेरापन' की भावना दबी होती है। और यहीं 'मेरा-पन' की भावना मनुष्य को विवेक-शुन्य बना देती है जो कि इसके ही मस्तिष्क की अस्वस्थता की परिचायक है "When doubt" दिमाग़ी कमज़ोरी ही शक पैदा करती है और शक़ की मजबूती पतन की निशानी है।

बीमारी का इलाज

इसलिए यदि हमें शक नाम की बीमारी को जड़-मूल से समाप्त करना है तो इसके लिए ज़रूरी है—मस्तिष्क की स्वस्थता। स्वस्थ मस्तिष्क में ही स्वस्थ विचार उत्पन्न होते हैं जो मनुष्य को सदा स्वस्थ और प्रसन्नचित बनाये रखते हैं। लेकिन यहाँ प्रश्न उठता है कि यदि हमरा मस्तिष्क स्वस्थ है ही नहीं, वो तो उनके कुँठाओं, चिन्ताओं, के कारण पीडित है तो इस कारण का निवारण ? प्रश्न चिन्ह मजबूत है। ये तो ऐसे रोग हैं जिनका निदान दवाईयों (Medicines) के द्वारा भी नहीं हो सकता है, तो क्या इसका कोई भी ईलाज़ नहीं ? है...ईलाज है, लेकिन थोड़ा गुह्य है, क्योंकि इसका ईलाज Medicines (औषधि) नहीं Meditation (एकाग्रचित्तता) है, और एकाग्रचित्तता के लिए आवश्यक है 'स्वस्थिति' में स्थित होना क्योंकि स्वस्थिति द्वारा ही परिस्थिति पर विजय पायी जा सकती है'। स्वस्थिति में स्थित मनुष्य सहज ही अपने संवेगों और व्यर्थ संकल्पों-विकल्पों पर नियन्त्रण रख सकता है अर्थात शांत स्वरूप स्थिति में स्थित हो सकता है। यहाँ एक बात पर विशेष ध्यान देना है कि स्वस्थिति में स्थित होने के लिए 'स्व' का अर्थात 'आत्मा' का ज्ञान होना जरूरी है। जब तक मनुष्य यह नहीं समझ लेता है कि मैं कौन हूँ ? कहाँ से आया हूँ ? क्यों आया हूँ ? कहाँ जाना है ? और वर्तमान समय के अनुसार से वर्तमान कर्म क्या होना चाहिए, तब तक वह स्वस्थिति में स्थित होकर अपने स्वधर्म (आत्मा का स्वधर्म शान्ति है !) में नहीं टिक सकता है। और जब मनुष्य अपने स्वधर्म को जानकर स्व-स्थिति में स्थित हो पाने की क्षमता विकसित कर लेगा तो उसकी ये एकाग्रचित्तता की क्षमता उसके मष्तिक को स्वस्थता प्रदान करेगी और चूंकि स्वस्थ मस्तिष्क ही स्वस्थ विचार धारा का स्त्रोत है, तो स्वतः ही स्वस्थ विचार धारा का मनुष्य अपनी शंकालु प्रवृत्ति से छुटकारा पाकर अपने जीवन को मानसिक रूप से व्यवस्थित रखकर शांत और उप-राम अवस्था में एक योगी का जीवन जीता है। तो देखना कहीं आप भी शक्की तो नहीं ? ●

सुख का साधन एक है

ले० ब्रह्माकुमार किशनचन्द सहारनपुर

सुख का साधन एक है, दुःख की राहें हैं अनेक।
कल्याणकारी, परमप्रिय, परमपिता ही है सुखदेव॥
हम सब का बाप एक है, बच्चे हैं उसके अनेक।
रहने वाले जिस जहान के, वह जहाँ भी है एक॥
हम सभी चमकते सितारे, पास रहता है वह बाप।
हम सितारे छोटे-छोटे, वह अकेला आफ़ताव॥
खेल का मैदान यह दुनिया जिस जगह बैठे हैं हम।
अल्लाह का बगीचा था जब प्रेम से रहते थे हम॥
धीरे-धीरे हम गिरे, शैतान हम पर छा गया।
भूल गये उस एक को, अनेकों से दिल लगा लिया॥
काले गोरे सिक्ख हिन्दु, कोई मुस्लिम है बना।
इन भेद-भावों के कारण हो गये हम सब तबाह॥

"नया रास्ता-पुराना रिश्ता"

लेखक : ब्र० कु० डा० रामाश्लोक मधुवन, आबू

हरेक मानव का जीवन एक कहानी है, जन्मते बचपन से लेकर मृत्युपर्यन्त बुढ़ापे तक ज़िन्दगी के अनेक रास्ते एवं अनेक मोड़ों से गुज़रना पड़ता है। इसमें अनेकानेक कठिनाईयाँ, सुख-दुःख, लाभ-हानि मान-अपमान, निंदा-स्तुति के उतराव-चढ़ाव के पड़ाव आते हैं। मनुष्य हरेक पड़ाव में कुछ क्षण रुककर आगे चल देता है। यही जीवन चक्र है, सुबह से शाम होती है, रात ढलती है, अन्धकार छा जाता है, पुनः सवेरा होता है, प्रकाश के प्रादुर्भाव से अन्धेरा भाग जाता है, प्रकृति का क्या ही अनूठा नियम है ! किसी ने ठीक ही कहा है—

किसी तरह कट जाय रात
फिर वही बात, रे वही बात।
चाहे आवे गर्मी, बरसात,
मिले सूखी रोटी, या दाल-भात ॥
पुनः आवेगा नव-प्रभात
फिर वही बात, रे वही बात ॥

अगर हर कोई अपने जीवन के घटना चक्र को लिखे तो अनेक ग्रंथों की रचना, बिना वेद-व्यास जी की मेहनत के हो सकती है। मेरी भी यही दशा है। स्कूल में पढ़ता था, वहाँ का वही पुराना घिसा-पिटा रास्ता था, जिस रास्ते पर मेरे परिवार के अनेक लोग चल चुके थे, चाचा जी कीर्तनकार, भाई साहब ब्रह्मानन्दी भजन-गायक और माता जी महान् भक्तिन; उपवास, पूजा-पाठ तो उनका दिनचर्या था, दूसरी ओर वे घर में आये हुए साधू-सन्तों का बड़ा आदर सत्कार करती थीं। चबूतरे पर बनी बैठक में साधू-महात्माओं की धूनी लगती, वहाँ अंगीठी सदैव जलती रहती। लेकिन मुझे आश्चर्य इस बात का होता कि उन महात्माओं के धूनी के धूएं से, अधिक धूआं उनके गांजा व चरस के चिल्लम से निकलता, जैसे कोई रेलवे इंजन 'लोको शैड' में खड़ी हो। कोई भी ग़रीब भिखारी हमारे घर के दरवाज़े से कुछ खाये-पीये बिना वापिस नहीं जाता था। लेकिन घर वालों के लिये आश्चर्य की बात यह थी कि ऐसे वातावरण में पलते हुए भी मैं महा नास्तिक ! हालांकि अपने अभिभावक के भय वा प्रेम से परिवार के सदस्यों को मंदिर तक छोड़ आता परन्तु मंदिर में पैर रखने को जी नहीं चाहता। जब कोई शारीरिक कष्ट होता, तो भगवान को याद करने वा प्रार्थना करने को सोचता था, लेकिन मेरे मानस-पटल पर, तुरन्त ही अनेकानेक प्रश्न उभर आते थे—भगवान् कौन है ? वह कहाँ रहता है ? क्या वह भी जन्म लेता और मरता है, फिर मुझ में और उसमें अन्तर क्या ? उसके सभी में विराजमान होते हुए भी सारी सृष्टि में पापाचार, भ्रष्टाचार और तबाही क्यों ? आदि-आदि प्रश्नों ने मुझे नास्तिक बना दिया था। बड़ी ही विडम्बना थी। वही पुरानी पगडंडी, जिस पर सभी चल रहे थे। मैं भी सदैव उनके रास्ते को देखता रहता था, मन में फिर प्रश्न उठता—आधुनिक लोग इतने पढ़े-लिखे एवं बुद्धिजीवी होने के बावजूद भी, क्या कोल्हू के बैल की तरह भक्तिमार्ग के कर्मकाण्ड, रूढ़ीवाद और अन्ध-विश्वास के गोल चक्कर में, घूमते हुए अपनी जीवन लीला समाप्त कर देंगे ? लेकिन इसके सिवा उनके पास दूसरा रास्ता ही कहाँ ?

इस समय भारत में भगवानों की भी बड़ी होड़ लगी हुई है। आदि काल से अपने-अपने धर्म के तो अनगिनत भगवान् थे ही साथ-साथ तैंतिस करोड़ देवी-देवताओं की अपनी मान्यता है, इसके बाद भी कुछ गुरु-गुसाइयों ने थोड़ा-बहुत शिष्य बनाये और खुद भगवान बन बैठे। लोग इसी भूल-भूलैया में इधर

उधर भटक रहे थे, बड़ी भगदड़ मची हुई थी। इस भगदड़ को देखकर, मैं इन सभी बातों से बहुत दूर खड़ा था। क्योंकि लोग जिस मनुष्यात्मा को भगवान्' की उपाधि देकर पूजा या मान्यता शुरू करते, वे भगवान शादी कर बच्चे पैदा करने लगते, तीर्थ यात्रा छोड़कर जेल यात्रा करते, कर्म श्रेष्ठ करने की जगह भ्रष्ट कर्म करने के उपदेश देते, वे कहा करते—जो भी मन कहे करो ! गाओ, रोओ, चिल्लाओ, हँसो या विषय-विकार में जाओ। मैं उन सभी भगवानों से आदर्श जीवन जीने की मांग करता, पवित्रता की मांग करता तो वे क्षणिक प्रलोभन में काल की कामना पूर्ण करने हेतु-ताबीज़, घड़ी, अंगूठी या भभूति हाथ में थमा देते। मैं सभी कर्म काण्डों को देखकर किंकर्तव्यविमुढ़ था। मुझे कोई नया रास्ता नज़र नहीं आ रहा था, जैसे हम, विषय वैतरणी नदी के मंझधार में खड़े हों, डूब रहे हों, चिल्ला रहे हों, लेकिन मेरा किसी से कोई सच्चा रिश्ता नहीं, जो मुझे बचावे, अपनी ही कमज़ोरी और दुर्गुणों से छुड़ावे और जैसा हम देखते हैं, यह हालत सिर्फ़ मेरी ही नहीं, अपितु समस्त मानव समाज की है, सारे विश्व को है, चाहे वह जिस भी धर्म, भाषा, जाति वा देश का क्यों न हो, सभी इस रोग से पीड़ित हैं।

विज्ञान का विद्यार्थी होने के कारण, विज्ञान वर्ता पर मैं काफी दिलचस्पी और गहराई से सोचता। लोग कहते हैं—विज्ञान ने बड़ी उन्नति की है, मैं भी कहता हूँ—हाँ, इसमें कोई सन्देह नहीं है, विज्ञान ने उन्नति ज़रूर की है, लेकिन इसके अणुबम, हाइड्रोजन बम, न्युट्रोन बम, एक राष्ट्र को दूसरे राष्ट्र से, भाई-भाई से, पति-पत्नी से, बाप-बेटे से शिक्षक-विद्यार्थी से, क्या आज सभी एक-दूसरे से भयभीत नहीं ? और जैसा कि आजकल समाचार पत्रों द्वारा हम पढ़ते या सुनते हैं कि चलते-फिरते, सड़कों पर खून-खराबा, बलात्कार, चोरी-डकैती, छेड़-छाड़ करना, आग लगाना और बसें लूटना तो सामान्य बात हो गई हैं।

भारत माँ अपने इस धुंधले भविष्य को देखकर अंधकारमय रास्ते में विलख-विलख कर रो रही है, मैं भी उसी अंधकार में भटक रहा था, जहां सभी भटक रहे हैं। १० वर्ष पूर्व अचानक मेरे एक मित्र ने मुझे एक विचित्र रास्ता दिखाया, जो देखने में अति साधारण परन्तु दुनिया से बिल्कुल ही भिन्न था, नया था। मैंने एक आगन्तुक गृह में प्रवेश किया। वहाँ के शान्त और पवित्र वातावरण ने मानो मेरे पैरों में ब्रेक लगा दिया, वहाँ से पवित्रता और शान्ति की रश्मियाँ प्रफुटित होकर सारे विश्व में फैल रही थी, मुझे भी इसकी अनुभूति हुई, जब मैंने वहाँ नियमित रूप से जाना शुरू किया तो मुझे अपने बिछुड़े हुए अनादि आत्मिक पिता परमात्मा शिव की सही पहचान मिली। उनसे वर्तालाप भी हुआ।

शिव बाबा, मुझ से बोले—मीठे-मीठे सिकिल धे रुहानी बच्चे ! तुम अपने रुहानी बाप के पास आ गये। तुम मेरे वही कल्प पहले वाले बच्चे हो, जो कल्प (५००० वर्ष) पहले भी कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि संगम पर साकार ब्रह्मा द्वारा मिलते रहे हो, अभी भी मिले हो, और कल्प-कल्प मिलते रहोगे। उन्होंने अपने सारे पुराने रिश्ते याद दिलाये। बोले— एक मैं ही निराकार परमात्मा शिव तुम सभी आत्माओं का मात-पिता, शिक्षक, सद्गुरु, साजन सखा हूँ। तुम सभी को पतित से पावन बनाने आया हूँ और पावन बनाकर फिर से वापिस अपने वास्तविक घर मुक्तिधाम साथ ले चलूंगा। मीठे बाबा के इन महावाक्यों से मीठास टपक रहा था, मैं एकटक दृष्टिपात करता, मौन था।

एक क्षण के बाद मुझे सभी कल्प, कल्पान्तर के पुराने रिश्ते याद आ गये। यादाश्त ताजा होते ही मेरे रोमान्च खड़े हो गए, आँखें गीली हो गयीं, पुरानी सारी स्मृतियाँ उभर आईं, मेरा मन मोर नाच उठा, मैं भी चुप न रह सका—और मन्द स्वर में बोल उठा—हाँ बाबा ! प्यारे बाबा, मीठे बाबा, आप हमारे हो, हमने आपको ढूंढा नहीं, आपने मुझे खोज

निकाला, मेरे सर्व कर्म बन्धनों को कटवा कर एक धक से अपना बनाया। महा नास्तिक को सच्चा आस्तिक बनाया। जिसको दुनियाँ में किसी ने नहीं पूछा, उसे आपने अपनी बांहों में समाकर अपनी गोदी में बिठाया, गले से लगाया, नैनों के नूर, गले के हार, नूरे जहान, क्या नहीं बनाया ? कमाल है आपकी बाबा जान···! उन्होंने आगे की स्मृति दिलाई— मीठे-मीठे रुहानी बच्चे ! ये बेहद का सम्बन्ध एवं अविनाशी सुख-शान्ति की प्राप्ति, उन बच्चों को ही अनुभव होगी जो ब्रह्मा मुख द्वारा रचित ब्राह्मण सो देवता बनने वाले हैं। वे ब्राह्मण बच्चे, आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत की पालना, शुद्ध खान-पान, दैवी गुणों की धारणा एवं ईश्वरीय सेवा के बिना एक पल भी रह नहीं सकते। उनके रोम-रोम में शिव बाबा की याद समाई होगी। बोलो— मीठे बच्चे ठीक है न ! हाँ जी बाबा; जी हाँ बाबा, मुझे याद आ गया, याद आ गया। बोलो प्रिय पाठको ! आप सभी को भी याद आया न ! देखिये ! स्वयं विश्व का मालिक बनाने वाले ज्ञान सागर पिता शिव टीचर बनकर याद दिला रहे हैं।

हम बच्चों से ये रूह रीहान कर रहे हैं और फिर से स्मृति भव, योगी भव का वरदान दे रहे हैं। सचमुच ! ये जन्म-जन्मान्तर के पुराने रिश्ते ने, मुझे एक असाधारण नये रास्ते पर आरूढ़ कर दिया, जीवन बदल दिया। इसके आगे वर्णन करने में मेरी लेखनी असमर्थ है। ये सभी अनुभव की बातें हैं, जिसके आप सभी अनुभवी हैं, जिन्होंने अनुभव नहीं किया, उनसे मेरा आग्रह है कि वे अनुभव जरूर करें, क्योंकि अनुभव बिना रस नहीं, और सर्व सम्बन्धों के रस के बिना, ये अमूल्य जीवन नीरस है, अर्थात् अवस्था एक रस नहीं है।

●×●

प्रभू आये "निज ज्ञान कराने"

(ले० ब्र० कु० मुन्नीलाल, बुन्दू कटरा, आगरा)

ईश्वर के अवतरण पर,
कितनी जग में भूल।
कारण इसका केवल है,
अंध विश्वास ही मूल ॥
कितना भ्रम है जग में भाई,
मुझसे खुद भी कहा न जाये।
फिर भी इच्छा यह अपनी है;
भ्रम का भन्डा फोड़ा जाये ॥
ईश्वर शिव के दिव्य जन्म की,
चर्चा मैंने जहाँ किया।
तरह-तरह के विघटन कारी,
उत्तर सबने मुझे दिया ॥
कोई कहा भगवान सभी में,
जगह नहीं कोई खालो।
चाहे चौबारा, घर होवे
या बहती गन्दी नाली ॥
भूख-प्यास और कण-कण में,
किसी ने मुझे सुनाया।
हर पुस्तक के पन्ने-पन्ने में,
प्रभु है मुझे बताया ॥
बोल-तोल अरु खेल रहा है,
वही प्रभु घट-घट में।
चमक रही है उसकी सूरत,
छिद्र मुक्त पट-पट में ॥
सभी रोग में, सभी भोग में,
प्रभू ही करे निवास।
योग और हठयोग में,
उसकी रहे मिठास ॥

सब प्रतिमाओं में वह बैठा,
वही तो सब में बोल रहा है।
गुत्थी भ्रम में रहकर भी वह,
गुत्थी भ्रम की खोल रहा ॥
कहा किसी ने जिसने,
प्रभु का दर्शन पाया।
सीधे लौटकर वह कभी
अपने घर न आया ॥
जिसने प्रभु को देखा है,
वह कुछ भी बोल न पाया।
गूँगा ही वह बन गया;
नहीं लौट घर आया ॥
जंगल में वह चल पड़ा,
छोड़ा घर परिवार।
खान-पान की चिन्ता तज,
किया प्रभु से प्यार ॥
लाखों सूरज की चमक,
प्रभु में कोई बताया।
अगर किसी ने देखा है,
वह अंधा हुआ सुनाया ॥
अज्ञानता की हद हो गई,
जड़ता की आँधी आई।
प्यारे मीठे प्रभु की,
क्या खिल्ली है उड़ाई ॥
दर्श मात्र से यदि कोई,
अन्धा-गूँगा बन जाता।
छोड़ कर्म निज जीवन का
अकर्मण्य बैठकर खाता ॥

फिर काहे को दुनियाँ वालो,
उसे खोजते फिरते ?
धक्के खाते दर-दर के,
अरू ठोकर खाते फिरते ॥
पालनहार प्रभु का भाई,
क्यों इतना अपमान कर रहे ?
जो भी मन में आ जाता है,
सब-कुछ उसको कहे जा रहे ॥
इतना है अज्ञान जगत में,
पहले मुझको भान नहीं था।
ऐसी बातें मैं भी करता;
क्योंकि पहले ज्ञान नहीं था ॥
लेकिन अहो भाग्य अपना है,
हमको प्रभुवर स्वयं मिला है।
संशय भ्रम मन से भागे हैं,
दिल में दिव्य प्रसून खिला है ॥
अगर उसे तुम को पाना है,
जैसे मैंने उसे जाना है।
छोड़ रूढ़ियों को हे ! भ्राता,
सेवा केन्द्रों पर आना है ॥
प्रभु आये निज ज्ञान कराने,
संशय भ्रम सब दूर भगाने।
सतयुगी सृष्टि फिर से बनाने;
सत्य धर्म का बाग लगाने ॥
समय अभी है बिल्कुल थोड़ा,
अगर नहीं प्रभु-नाता जोड़ा।
नहीं विकारों को यदि छोड़ा;
पाओगे धर्मराज का कोड़ा ॥

—:०:—

बरेली में आयोजित मेले के समापन समारोह के अवसर पर ब्र०-कु० उषा प्रवचन कर रही हैं। मंच पर मुख्य अतिथि उमाशंकर वकील व अन्य भगत गण बैठे हैं।

नासिक सेवा केन्द्र द्वारा नवरात्री के अवसर पर कालिका माता मन्दिर के प्रमुख द्वार पर आयोजित प्रर्दशनी का उद्घाटन वहाँ के पुलिस के उप-महा निरिक्षक भ्राता वर्मा जी कर रहे हैं।

हुबली में चित्र दुर्ग सेवा केन्द्र का उद्घाटन दादी प्रकाशमणी जी कर रही हैं साथ में ब्र० कु० मोहिनी जी तथा अन्य बहनें भी हैं।

आस्ट्रेलिया में आयोजित 'सम्मेलन में भाग लेने के पश्चात ब्र० कु० सुमन वहाँ के प्रसिद्ध डा० हैदरर मिनचन को ईश्वरीय सन्देश सुना रही हैं।

मोगा में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ के मजिस्ट्रेट भ्राता एम० एम० अग्रवाल टेप काट कर कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० संजीवनी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

यह चित्र मथुरा में आयोजित राजयोग प्रदर्शनी के अवसर का है जिसमें वर्तमान एम० पी० चौधरी दिगम्बर सिंह मोमबत्ती जलाकर प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में ब्र०कु० बहनों के साथ उनकी युगल दिखाई दे रही हैं।

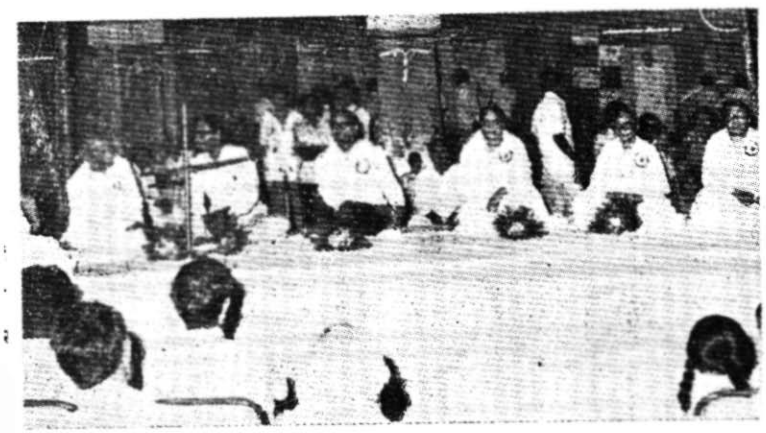

सीकर में आयोजित आध्यात्मिक मेला के उद्घाटन समारोह में वहाँ के जिलाधीश भ्राता परमेशचन्द जी प्रवचन कर रहे हैं। मँच पर राजस्थान वित्त निगम के प्रबन्ध संचालक, ब्र०कु० हृदय मोहिनी जी, रत्न मोहिनी आदि बैठे हैं।

पोरबन्दर आनन्द सोसाइटी के नवयुवकों द्वारा आयोजित कार्यक्रम में प्रवचन करने के बाद ब्र०कु० नलिनी व गीता बहन उनके साथ खड़े हैं।

मानवधर्म

लेखक ब्रह्माकुमार डा० यु० एस० पाठक, नागपुर

धर्म का सही अर्थ है—कर्त्तव्य हर मनुष्य का जो इस धरती पर जन्म लेता है। मृत्यु पर्यन्त उसका कुछ कर्त्तव्य होता है। किन्तु वह अज्ञानता और परिस्थितियों के जाल में फँसकर अपने सही कर्त्तव्य को भूलकर जीवन-भर भटकता रहता है। कर्त्तव्य के बदले ग़लत आदतों में फँसकर बुरे काम करता रहता है, जिसके कारण वह देश के लिए, समाज के लिए, कुटुम्ब के लिए और स्वयं अपने लिए भार स्वरूप बन जाता है, दुःखदायी बन जाता है। ऐसे ही लोगों को संसार में राक्षस या दुष्ट नाम से संम्बोधित करते आये हैं। इसलिए यह निश्चित निर्विवाद सत्य हैं कि प्रत्येक मनुष्य को एक धर्म चाहिए।

परन्तु वह धर्म कैसा हो, आज तक यह विवाद का विषय बना रहा। किन्तु यह सौभाग्य की बात है कि भयंकर टकराव के बाद तथा अत्यधिक विवाद के बाद बहुत ही अन्वेषण के पश्चात ऐसा एक वैज्ञानिक धर्म अपने अस्तित्व में आ गया है जिसका केन्द्र बिन्दु है पांडव भवन, माऊण्ट आबू, राजस्थान (हिन्दुस्थान)। धर्म तो सही माने में वही धर्म है कर्त्तव्य है जो निर्विवाद हो। विश्व के मानव के लिए मानव धर्म ही ऐसा स्वरूप दिखला सकता है जिसमें वेष का बंधन नहीं; जाति पाँति, छुआ-छूत ऊँच-नीच का भेद नहीं; भाषा, प्रान्त, और देश का विवाद नहीं; काले-गोरे का सवाल नहीं, मंदिर, मस्जिद, गिरजा और मठ तथा गुरुद्वारे का झगड़ा नहीं, अलगाव और मठाधीश या ईश्वरीय अवतार बनने का ढोंग नहीं। इन सबसे परे मनुष्य मनुष्य हैं और हर मनुष्य के अन्दर निवास करने वाली एक आत्मा है। उसका बाप परमपिता परमेश्वर एक है जो कि ब्रह्म लोक का निवासी ज्योति बन्दु स्वरूप हैं जिसका सही नाम शिव (कल्याणकारी) है। हम सभी मानव समुदाय के लोग (आत्माएँ) उसी की संतान हैं। इसका बोध कराने वाला धर्म भारत में ही स्थापित हुआ है। वह इसलिए कि भारत हमेशा-हमेशा से आध्यात्म के अनुकूल रहा है। आदि काल से विश्व को आध्यात्म की ज्योति जगाकर धर्म की सही राह पर चलाते रहने का कार्य करता आया है। विश्व का वर्तमान समाज भौतिकवाद के शिकंजे में जकड़ गया है। शराब, व्यभिचार, अनैतिकता, स्वार्थ और बुराइयों से लबालब भर चुका है। शीघ्र ही इसका नाश अवश्यम्भावी है, इन बुराइयों के साथ-ही-साथ अधिकांश मानव समुदाय भी नष्ट हो जाएगा।

सतयुग आएगा, इस धरती पर पुनः स्वर्ग का साम्राज्य होगा। लोग अपने आपको पहचानेंगे। अच्छा होगा कि विनाश के पहले ही संसार के लोग इस आधुनिक और वैज्ञानिक धर्म को पहचाने और उसकी छाया में आकर अपने आपको पवित्र बनाएँ। त्यागी बने, योगी बने, सांसारिक विकारों से मुक्ति प्राप्त करें और अपने-आपको, समाज को, देश को और विश्व को विनाश से बचाएँ। इस आडंबर-रहित धर्म को अपनाकर अपना और विश्व का कल्याण करें। यदि समय रहते ही आप में चेतना नहीं आई तो पछताने के सिवाय कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इसलिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आकर अपना और विश्व का कल्याण करें। यदि आपको समय मिले तो विचार करें कि ईसा मसीह सूली पर क्यों चढ़े, गौतम बुद्ध ने राजपाट क्यों छोड़ा, राम ने रावण से, कृष्ण ने कंस से संघर्ष

क्यों किया, महावीर स्वामी, गुरुनानक और पैगम्बर मोहम्मद साहब जीवन भर किस सिद्धान्त के लिए संघर्ष करते रहे ? महात्मा गांधी तथा विवेकानंद को अकाल मृत्यु का शिकार क्यों बनना पड़ा ? क्या इन महात्माओं में से कोई शराबी था, जुआरी था, धन दौलत का लोभी था ? क्या उनमें कामुकता थी, निजी स्वार्थ था ? नहीं, तो फिर हम सब इस भयंकर भौतिकवाद के लोभ में और बुराइयों में क्यों फंसे हुए हैं ? चोर, डाकू, शराबी, जुआरी, कामी या व्यसनी व्यक्ति को हिन्दू, मुसलमान, बौद्ध, ईसाई या किसी जाति, धर्म का मानने वाला कहीं कहा जा सकता। यदि कोई ऐसा पापी व्यक्ति अपने-आपको किसी जाति, धर्म का व्यक्ति बताता है तो वह उस जाति या धर्म का अपमान करता है। ऐसे व्यक्ति को माफ़ नहीं किया जा सकता। यदि आपमें ये बुराइयाँ हैं तो आप परमात्मा शिव की शरण में आओ, वही आपको क्षमा कर सकते हैं। आप इनसे छुटकारा चाहते हैं तो आज ही ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के सम्पर्क में आयें, परमात्मा शिव आपका कल्याण अवश्य करेंगे। यहाँ जाति नहीं, वर्ग नहीं—सिर्फ धर्म हैं—मानवधर्म।

"स्वप्निल निद्रा से जगा गया है कोई !"

ब्र० कु० अमलोक, भीलवाड़ा, राजस्थान

अलसाई मुद्रा से
स्वप्निल निद्रा से
मुझे—
जगा गया है कोई
.....वह कौन ?

परम प्यारे शिव बाबा मेरे—तुम्हीं हो, तुम्हीं !
सतयुगी सुगन्धी लहरों के विमान पर बिठा
चुपचाप, देहभान के महलों से
मुझे—
चुरा ले गया है कोई,
.....वह कौन ?

ज्ञान रत्नों के सौदागर बाबा—तुम्हीं हो, तुम्हीं !
पाँवों में मेरे, बाँध सेवा की पायल
इन जीवन मुक्ति की राहों में
मुझे—
चला रहा है कोई,
.....वह कौन ?

विश्व सेवक मेरे बाबा—तुम्हीं हो तुम्हीं !
वे सीप-सी दो हथेलियों बीच, मोती-सा
जीवन मेरा सँजोये, छुपाकर माया की नजर से
मुझे—
गहराइयों में उतार ले आया है कोई,
.....वह कौन ?

सागर प्यार के, बाबा मेरे, तुम्हीं हो तुम्हीं !
जो—
जगा गया है मुझे
अलसाई मुद्रा से
स्वप्निल निद्रा से !!

संसार में दुःख और अशुभ क्यों है ?

हम देखते हैं कि संसार में तीन प्रकार के दुःख, कष्ट अथवा अशुभ का आस्तित्व है—एक तो दैहिक, जैसे कि शारीरिक रोग, पीड़ाएँ, दर्द, मृत्यु आदि और दूसरे, दैविक, जैसे कि भूकम्प, बाढ़, अतिवृद्धि, अनावृद्धि आदि और, तीसरे, आध्यात्मिक, अथवा मानसिक—जैसे चिन्ता, अशान्ति, वेदना, तनाव आदि। कुछ लोग अशुभ का इस प्रकार वर्गीकरण न कर के सत्यं, शिवं और सुन्दरं के विरोधी भाव—असत्य, पीड़ा, कुरूपता तथा पाप को ही अशुभ के चार विशेष रूप में मानते हैं। परन्तु अशुभ का वर्गीकरण चाहे किसी तरह भी किया जाय, अशुभ का अस्तित्व तो संसार में स्पष्ट है और झूठ, चोरी, अन्याय, आतंक, दरिद्रता, प्राकृतिक प्रकोप आदि से मनुष्य को कष्ट होते स्पष्ट दिखाई देते हैं। इन्हीं के निवारण के लिये व्यक्ति, संस्थाएँ और सरकारें दिन-रात पुरुषार्थ करती रहती हैं। इन्हीं दुःखों आदि से निवृत्ति प्राप्त करने के लिये ही अनेक धर्म, मत, वाद तथा सम्प्रदाय स्थापन हुए हैं। परन्तु यदि हम संसार के इतिहास को, विशेषकर धर्मों और दर्शनों के इतिहास (History of Religions and Philosophies) को उठाकर देखें तो हमें मालूम होगा कि संसार में दुःख और अशुभ Sufferings and Evils) के अस्तित्व और उनके कारण के बारे में जो अनेक दर्शनों और धर्मों की मान्यताएँ हैं, वे बड़ी विचित्र हैं। उनके बारे में कोई सन्तोषजनक उत्तर न होने के कारण ही बहुत से तर्कशील मनुष्यों की श्रद्धा ही धर्म से उठ जाती है और वे धर्म-विश्वासी लोगों को 'अन्ध-श्रद्धालु' की संज्ञा देते हैं। संसार में दुःख, बुराई, पाप, मनोविकार अथवा अशान्ति क्यों है ?—इस प्रश्न को लेकर संसार के कुछ मुख्य धर्मों की जो मान्यताएँ हैं, उन पर हम विचार कर के देखेंगे कि तर्कशील मनुष्य उससे सन्तुष्ट क्यों नहीं होते।

संसार में अशुभ क्यों है ?

अब बहुत से ईश्वरवादी धर्म मानते हैं कि यह पृथ्वी, सूर्य, चाँद आदि संसार परमात्मा ने रचा और कि परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, सर्वव्यापक तथा दयालु और प्रेममय है। उनसे जब यह प्रश्न किये जाते हैं कि—"यदि परमात्मा सर्वज्ञ भी है और सर्वशक्तिमान भी तो उसने जो सृष्टि बनाई उसमें अशुभ एवं दुःख क्यों है ? परमात्मा ने ऐसी दुःखमय सृष्टि बनाई क्यों ? यदि परमात्मा इस संसार से दुःख को मिटा नहीं सकता तो वह सर्वशक्तिमान नहीं है और यदि उसे पता नहीं था कि संसार की रचना करने पर उसमें ऐसा दुःख होगा तो वह सर्वज्ञ सिद्ध नहीं होता और यदि वह सर्वशक्तिमान भी है तथा सर्वज्ञ भी है तब भी यदि वह अशुभ का अन्त नहीं करता तो इसका अर्थ यह है कि वह दयावान नहीं है। बल्कि अनिष्टकारी है। तब परमात्मा के स्वरूप के बारे में क्या माना जाय ?" ये जो प्रश्नों की झड़ी लग जाती है, इसके उत्तर विभिन्न धर्म विभिन्न प्रकार से देते हैं; इसलिए धर्मों में अनेकता है। यहाँ हम कुछ उदाहरण देंगे।

शैतान या अहर्मान के अस्तित्व की मान्यता

ईसाई धर्म और मुहम्मदी धर्म तो यह मानते हैं कि संसार की रचना तो परमात्मा ने की और परमात्मा है भी दयावान परन्तु परमात्मा के अतिरिक्त 'शैतान' (Satan) नामक एक 'फरिश्ते' का अस्तित्व है जो परमात्मा से बाग़ी हो गया था। वही मनुष्यों को बरग़लाता है और दुःख उत्पन्न करता है। इसी प्रकार पारसी लोग अहुर्मज़दा (परमात्मा) के अतिरिक्त अहर्मान का भी अस्तित्व मानते हैं जो कि अशुभ और कष्ट लाता है। इसका अर्थ तो यह है कि परमात्मा की शक्ति सीमित है क्योंकि उसके अलावा एक शक्तिशाली और भी है जिसका वह पूर्णतः अन्त

नहीं कर सकता और जिसके बारे में उसे पहले से मालूम नहीं था कि यह बाग़ी हो जायगा और लोगों को बरगलायेगा।

दूसरी प्रकार के ईश्वरवादी लोग कहते हैं कि परमात्मा है तो सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ और दयालु और उसी ने ही जगत् की रचना की है तथा वही दुःख और प्राकृतिक प्रकोप को भी लाता है परन्तु यह दुःख और अशुभ वास्तव में दुःख और अशुभ नहीं हैं। उनका कथन है कि जैसे माता अपने किसी बच्चे को पीटती है तब उस बच्चे को तो पीड़ा अनुभव होती है परन्तु उस दण्ड से वह बच्चा सुधर जाता है और उसका शेष सारा जीवन शुभ बन जाता है। अतः यदि समस्त जीवन को सामने रखा जाय तो अशुभ वास्तव में अशुभ नहीं क्योंकि अशुभ मनुष्य को बुरे कर्म से बचने और अच्छाई की ओर बढ़ने में सहायक होता है। परन्तु इस व्याख्या को सुनकर तर्कशील लोग कहते हैं—"परन्तु कितने ही मनुष्य ऐसी अशुभ परिस्थिति में होते हैं कि वे आत्महत्या भी कर डालते हैं। अन्य कितने लोग ऐसे भी होते हैं जो अशुभ से घिरे होने पर अधिक ही पतन की ओर अग्रसर होते हैं। हम तो संसार में प्राकृतिक तथा नैतिक अशुभ को बढ़ते हुए ही देखते हैं; संसार में अशुभ भला शुभ की ओर ले जाने में कहाँ निमित्त बन रहा है? अच्छा यदि अशुभ मनुष्य को शुभ की ओर प्रेरित करने का निमित्त बनता है जैसे कि माता द्वारा बच्चे को दिया गया दण्ड उसमें सुधार लाता है तो क्या परमात्मा को इतना कठोर साधन अपनाना पड़ता है? उसके पास इससे अधिक सरल और कष्ट-रहित और कोई साधन नहीं है? फिर, प्रश्न तो यह है कि परमात्मा ने ऐसी सृष्टि रची ही क्यों जिसमें अशुभ इतना अधिक है? ऐसी सृष्टि रचने से उसका क्या प्रयोजन सिद्ध होता है? यदि परमात्मा सम्पूर्ण है तो उसने ऐसी अपूर्ण सृष्टि क्यों रची?" उनका कथन है कि यदि अशुभ शुभ के निर्माण में सहायक है तब तो मनुष्य उसके निवारण का प्रयत्न ही क्यों करे और यदि वह ऐसा प्रयत्न नहीं करेगा तब तो संसार में अशुभ की वृद्धि ही होगी? इन प्रश्नों का उत्तर संसार में ईश्वरवादी धर्म नहीं दे सकते।

अद्वैतवादी क्या कहते हैं?

संसार में 'अशुभ' के बारे में अद्वैतवादियों की मान्यता सबसे विचित्र है। अद्वैतवादियों के अनुसार ईश्वर अथवा ब्रह्म ही एकमात्र सत्ता है और इसके सिवा दूसरी कोई सत्ता है ही नहीं। इसके अनुसार तो जगत् भी मिथ्या है और संसार में जो कुछ भी दिखाई देता है, वह भी भ्रान्ति अथवा कल्पना है। अतः उनकी विचित्र मान्यता यह है कि अशुभ का भी अस्तित्व नहीं है और अज्ञान के कारण उसे अशुभ की प्रतीति मात्र होती है।

अब यह कितनी विचित्र बात है कि कोई मनुष्य भूख से पीड़ित हो और हम उसे कहें कि भूख कल्पित है अथवा किसी के सिर पर कड़ी चोट आयी हो और हम कहें कि दर्द केवल अज्ञानता ही के कारण भ्रम मात्र है और आत्मा तो सुख-दुःख से अतीत है। इस अद्वैतवादी व्याख्या से मनुष्य न तो अशुभ से छूटने का पुरुषार्थ कर सकता है, न अशुभ और शुभ के स्वरूप को जान सकता है और न ही उसे इससे राहत मिलती है। क्योंकि दुःख-दर्द से कराहते हुए मनुष्य को यह कहने से कि उसका दुःख कल्पित है, उसे शान्ति नहीं मिलती बल्कि उसके ज़ख़्म पर नमक पड़ता हुआ मालूम होता है।

पुनश्च, यदि इस व्याख्या पर दार्शनिक दृष्टि से विचार किया जाय तो प्रश्न उठता है कि यदि अशुभ है ही नहीं तब तो फिर शुभ भी नहीं रहा क्योंकि शुभ तो अशुभ की तुलना में ही 'शुभ' कहला सकता है। इसके अतिरिक्त, जिस तर्क और बुद्धि के आधार पर अद्वैतवाद अशुद्ध को प्रतीतिमात्र मानता है, उस आधार पर तो शुद्ध को भी प्रतीति अथवा कल्पना सिद्ध किया जा सकता है। तीसरे, अद्वैतवाद इस

प्रश्न का भी सन्तोषजनक निराकरण नहीं करता कि यदि एक ही पूर्ण ब्रह्म है और ज्ञानस्वरूप है तो दुःख की प्रतीति क्यों होती है और वह अज्ञानता से अवृति क्यों होता है, और यदि स्वयं ब्रह्म को स्वेच्छा ही से ऐसी प्रतीति होती है तो फिर इससे मुक्त होने के पुरुषार्थ की क्या आवश्यकता है और उसका संकल्प कौन करता है ? अद्वैतवादी कहते हैं कि 'माया' जो ही जीव को आवृत्त किए हुए है, स्वयं ईश्वर अथवा ब्रह्म ही की एक शक्ति है और इसी के कारण जीव अज्ञानता अथवा अविद्या से ढका हुआ है। यदि ऐसा है तब भी भाव तो यही हुआ कि स्वयं परमात्मा ही ने जीव को दुःख के वशीभूत किया है। अतः फिर भी वही प्रश्न बना रहता है कि पूर्ण परमात्मा ने ऐसा क्यों किया ? इसका उत्तर वे नहीं दे पाते।

हाँ, कई अद्वैतवादी कहते हैं कि परमात्मा ने लीला करने के लिए ऐसा किया। इस विषय में स्वामी रामकृष्ण परमहंस के निम्नलिखित शब्द पढ़िये—

"सभी ईश्वर के अधीन हैं। उन्हीं की लीला है। उन्होंने अनेक वस्तुओं की सृष्टि की है—छोटी-बड़ी, भली-बुरी, मज़बूत-कमजोर, अच्छे आदमी-बुरे आदमी। यह सब उन्हीं की माया है, उन्हीं का खेल है। देखो न बग़ीचे में सभी पेड़ बराबर नहीं होते।"

इसमें अद्वैतवादी विचारधारा का स्पष्ट उल्लेख है कि अच्छे और बुरे, दोनों प्रकार के मनुष्य भगवान ने रचे हैं। अतः वही प्रश्न फिर सामने आता है कि ईश्वर ने बुरे मनुष्य क्यों रचे हैं और ऐसी लीला क्यों की जिसमें दुःख है ?

इस प्रकार, हम देखते हैं कि परमात्मा और अशुभ के बारे में कहीं भी सन्तोषजनक व्याख्या नहीं मिलती।

स्वयं परमपिता परमात्मा द्वारा प्राप्त स्पष्टीकरण

अब परमपिता परमात्मा ने स्पष्ट किया है कि हरेक आत्मा परमात्मा से अलग अस्तित्व रखती है और हरेक के संस्कार, विचार तथा कर्म अलग हैं और उन अपूर्ण एवं अल्पज्ञ आत्माओं के अपने-अपने मनोविकारों के परिणामस्वरूप ही संसार में अशुभ अथवा दुःख का अस्तित्व है। उन्होंने समझाया है कि उन्होंने जिस संसार की रचना की थी, उसमें अशुभ नाम मात्र भी न था बल्कि उसमें पूर्ण पवित्रता, सुख और शान्ति थी। पुनश्च, उन्होंने यह भी स्पष्ट किया है कि उन्होंने सूर्य, चाँद, पृथ्वी आदि की रचना नहीं की बल्कि पूर्व कल्प की अत्यन्त अशुभ एवं दुःख वाली सृष्टि को सतयुगी शुभ सृष्टि की स्थापना की थी। इस व्याख्या से परमात्मा ज्ञान, शान्ति, आनन्द और प्रेम आदि गुणों से सदा युक्त सिद्ध होते हैं और प्रायः पूछे जाने वाले प्रश्नों का भी समाधान मिल जाता है। इस बात को जानकर मनुष्य निर्विकार बनने का पुरुषार्थ भी करता है और आगे के लिए बुरे कर्मों से बचने का भी। इससे परमात्मा पर कोई भी दोष भी नहीं आता और सद्गुणों तथा नैतिक मूल्य रूपी शुभ का यथार्थ बोध भी होता है।

श्री म० श्रीरामकृष्ण वचनामृत—प्रथम भाग, पृष्ठ २७६

: | :::: | :

शिव बाप कहते-मेरे बनो, खुशियों के नग़मे गाओगे।
मेरे गले का हार हो, मेरे गले में आओगे॥

नवरात्रि दशहरा एवं दीपावली के अवसर पर की गई ईश्वरीय सेवाएँ

झज्जर—में स्थित सेवा केन्द्र की ओर से स्थानीय हनुमान मन्दिर में दशहरा के अवसर पर चार दिनों के लिए 'चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी' का आयोजन किया गया जिसे हजारों लोगों ने देखा और श्रेष्ठाचारी जीवन बनाने की प्रेरणा ली।

पाटनगर—(गाँधीनगर) सेवा केन्द्र की ओर से एक पत्रकार परिषद् का आयोजन किया गया जिसमें स्थानीय समाचार पत्रों के २२ पत्रकारों ने भाग लिया। इसके अतिरिक्त 'नव-देवियों की चैतन्य झाकियाँ' तथा शिवदर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिससे १५००० लोगों ने लाभ उठाया।

पोरबन्दर—सेवा-केन्द्र की ओर से नव-रात्रि के दिनों चैतन्य देवियों की झाँकी तथा आध्यात्मक प्रदर्शनी का कार्यक्रम बहुत ही सफल रहा। इसी प्रकार 'नारी-स्नेह मिलन' का आयोजन किया गया जिससे अनेक प्रतिष्ठित महिलाओं ने भाग लिया।

कोननगर—(कलकत्ता) सेवा-केन्द्र की ओर से दुर्गा-पूजा के अवसर पर आयोजित प्रदर्शनी से हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

नासिक— सेवा-केन्द्र की ओर 'कालिका मन्दिर' के प्रांगण में नवरात्रि-महोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। आध्यात्मिक प्रदर्शनी तथा "चैतन्य झाँकियों" द्वारा हजारों लोगों को "परमात्मा शिव और-शक्तियों" का वास्तविक परिचय दिया गया।

कटक—सेवा-केन्द्र की ओर से दुर्गापूजा के अवसर पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी एवं प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

लुधियाना—में दशहरा के अवसर पर रामलीला मैदान में आध्यात्मिक प्रर्दशनी का आयोजन एक विशाल पण्डाल में किया गया, जिसका उद्घाटन रामलीला कमेटी के प्रधान ने किया। इस प्रर्दशनी को लाखों लोगों ने देखा और परमात्मा शिव का वास्तविक परिचय प्राप्त किया। दीपावली के अवसर पर 'मर्चेन्ट ऐसोसियेशन हाल' में बहनों के प्रवचन हुए जिससे अनेक सदस्यों ने लाभ उठाया।

बोकारो स्टील सिटी—में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से दुर्गापूजा के अवसर पर विश्व नव-निर्माण आध्यात्मिक प्रर्दशनी का आयोजन किया गया जिसे ५ दिनों में लगभग १०००० लोगों ने देखा और शिव परमात्मा का सन्देश प्राप्त किया। इस प्रर्दशनी का उद्घाटन वहाँ की काँग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भ्राता पी० एन० त्रिपाठी जी ने किया जो प्रर्दशनी को देखकर बहुत ही प्रभावित हुआ।

कानपुर—(नया गंज) सेवा-केन्द्र की ओर नव-रात्रि तथा दशहरा के अवसर पर वहाँ के प्रसिद्ध गीता मन्दिर में 'विश्व नव-निर्माण प्रर्दशनी' का आयोजन किया जिससे हजारों भक्तों ने परमात्मा शिव व देवताओं का परिचय पाया।

बेलगाम—सेवा-केन्द्र की ओर से कडोली, हीरे वागेवीडा, में नवरात्रि व दशहरे के अवसर पर दस दिनों का आध्यात्मिक कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

मोगा—सेवा-केन्द्र की ओर से चरित्र-निर्माण प्रर्दशनी का आयोजन किया गया, तथा प्रवचनों द्वारा रावण के दस शीस का वास्तविक अर्थ बताया। इसी प्रकार दस-सूत्री कार्यक्रम के अर्न्तगत अनेक ग्रामों में आध्यात्मिक प्रवचनों व प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

चित्तौड़—में दशहरा के अवसर पर आध्यात्मिक

प्रर्दशनी व राजयोग शिविर का कार्यक्रम हुआ जिस से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

चन्द्रपुर—सेवा केन्द्र की ओर से अरेरी कृषि-विश्वविद्यालय तथा राजुरा में दस-सूत्री कार्यक्रम के अर्न्तगत राजयोग शिविर तथा आध्यात्मिक प्रर्दशनी का आयोजन किया जिससे लगभग १०,००० लोगों ने लाभ उठाया। इसी प्रकार निकटवर्ती ग्रामों में आयोजित प्रर्दशनी व प्रवचनों के कार्यक्रम बहुत ही सफल रहे जिनमें से विसापुर वार्मणा, विट्ठल मन्दिर वार्ड तरोडी, कागजनगर, महाकाली वार्ड आदि का नाम उल्लेखनीय है।

बड़ौपदा—सेवा-केन्द्र द्वारा नीलगिरी में योगा-शिविर व प्रर्दशनी का आयोजन किया गया जिससे लोगों ने लाभ उठाया।

रायगढ़—में दिव्य जीवन निर्माण आध्यात्मिक मेला एवं सम्मेलन का आयोजन वहाँ के प्रसिद्ध टाऊनहाल के विशाल मैदान में किया गया, तथा शहर के प्रमुख भागों से विशाल शोभा यात्रा निकाली गई। मध्य प्रदेश के उद्योग मंत्री भ्राता मुवलाल मेड़िया मुख्य अतिथी के रूप में पधारे थे तथा ३० हजारों लोगों के अतिरिक्त वहाँ के अनेक उद्योग-पतियों व व्यापारियों ने भी इस मेले से लाभ उठाया। ज्ञानयुक्त गीतों, कविताओं नाटक व फिल्म शो का। आयोजन विशेष तौर से जनता को आकर्षित करता था।

सतना—सेवा-केन्द्र द्वारा हरिजन बस्ती में स्थित स्कूल में आध्यात्मिक प्रर्दशनी का आयोजन किया जिससे विद्यार्थियों एवं शिक्षकों के अतिरिक्त हजारों लोगों ने लाभ उठाया जिनमें हरिजनों की मुख्य तौर पर सेवा की गई। इसी प्रकार भानिक पुर में भी हरिजनों की सेवा कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

होशियार पुर—के निकटवर्ती ग्रामीण जनता की परमात्मा शिव का सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रर्द-शनी, प्रवचनों एवं प्रोजैक्टर शो का आयोजन किया गया, जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

अम्बाला—में स्थित सेवा-केन्द्र की ओर से "गाड़ा ग्राम" सन्त आश्रम, व सैन्ट्रल स्कूल में आयोजित प्रवचनों व प्रोजैक्टर शो का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा जिससे हज़ारों लोगों ने परमात्मा शिव का सन्देश व वास्तविक परिचय पाया।

बड़ौदा—सेवा-केन्द्र की ओर से "तारकेश्वर महादेव मन्दिर" पाजी गेट की हरि सोसायटी, पादरा ग्राम, दरापुरा ग्राम व डभाई में आध्यात्मिक प्रवचनों, गीतों एवं प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों लोगों ने लाभ उठाया।

अलवर—में शिव मन्दिर ब्रह्माचारी नगर व हिन्दूवाड़ा आदि स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम बड़ा ही सफल रहा।

मुरादाबाद—में स्थित सेवाकेन्द्र की ओर से पुलिस व जवानों एवं आफिसरों को भी ईश्वरीय सन्देश दिया गया। शहर की स्थिति शान्त न होने के बावजूद भी वहाँ के बहन भाई निर्भीक भाव से ईश्वरीय सेवा में संलग्न हैं तथा बिना भेदभाव के अशान्त दुःखी आत्माओं की सेवा करते हैं।

तिनसुकिया—डिब्रुगढ़, डिग्बोई में ब्रह्माकुमारी निर्मला शान्ताजी, रमेश भाई व उनकी युगल के विदेश यात्रा से लौटने पर हार्दिक स्वागत किया गया तथा कई स्थानों पर सार्वजनिक प्रवचनो का व साँस्कृतिक कार्यक्रम रखे थे जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया। डिग्बोई में नवीन सेवा केन्द्र का उद्घाटन ब्र० कु० निर्मलशान्ता जी के करकमलों द्वारा हुआ तथा वहाँ के इण्डिया क्लब में पब्लिक फंक्शन रखा गया। हज़ारों लोगों ने इससे लाभ उठाया।

राजौरी गार्डन—(नई दिल्ली) सेवा-केन्द्र की ओर से बसई दारापुर में स्थित ई० एस० आई० अस्पताल में चार दिनों के लिए आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया जिससे हजारों रोगियों व डाक्टरों ने लाभ उठाया।

भावनगर—सेवा-केन्द्र की ओर से धधुका तालुका, भँडारिया ग्राम, ढसा ग्राम तथा महुआ आदि स्थानों पर प्रवचनों प्रोजैक्टर शो तथा प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ जिससे हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया।

ढेकानाल—में दस-सूत्री कार्यक्रम के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रवचनों का कार्यक्रम हुआ जिससे अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

हुबली—सेवा-केन्द्र का वार्षिकोत्सव बड़ी धूम-धाम से मनाया गया। जिसमें वहां के उपमन्त्री भ्राता एफ० एच० मोहसीन व हुबली के कमिश्नर भी पधारे थे। अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

धुलिया—में गणेश उत्सव मण्डल के निमन्त्रण पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे २००० लोगों ने लाभ उठाया।

वाराणसी—सेवा-केन्द्र की ओर से काशी हिन्दू विश्व-विद्यालय परिसद के निकट करौदी ग्राम में "भारत-दर्शन आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिससे विभिन्न वर्ग के हज़ारों लोगों ने लाभ उठाया।

भण्डारा—सेवा-केन्द्र द्वारा निकटवर्ती ग्रामों में जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु आध्यात्मिक प्रवचनों व प्रदर्शनी का कार्यक्रम हुआ जिससे हजारों ग्रामीण जनता ने लाभ उठाया।

सिन्दरी—सेवा केन्द्र की और से डिगवाडीह अन्ध विद्यालय में अध्यात्मिक प्रवचन का कार्यक्रम हुआ। वहाँ के सुप्रीडेंन्ट एस०जे० पांड़े बहुत ही प्रभावित हुए और आगे के लिए निमन्त्रण भी दिया। इसके अलावा दुर्गा पूजा के शुभ अवसर पर सिन्दरी में चार दिन के लिए विश्व नव-निर्माण-प्रर्दशनी का आयोजन किया गया जिसमें हजारों आत्माओं ने लाभ उठाया और कई आत्माओं ने साप्ताहिक कोर्स भी किया।

"हम बच्चे भोले भाले हैं"

ले० ब्रह्माकुमार श्यामपचौरी सिकन्दराऊ

जीवन्मुक्ति ही ध्येय हमारा।
ज्ञान मार्ग ही श्रेय हमारा,
विकारों को तजने वाले हैं,
हम बच्चे भोले-भाले हैं।

ज्ञान का दीप लेकर कर में
प्रेम की ज्योति जगायें जग में
हम प्रीति बढ़ाने वाले हैं
हम बच्चे भोले-भाले हैं

फूलों पर जैसे बढ़े अली,
असूलों पर जैसे बढ़े बली,
माँ-बाप के राज दुलारे हैं।
हम बच्चे भोले-भाले हैं।

संगम में हमने रहना सीखा
शिव से ज्ञान-योग है सीखा
हिल मिल कर रहने वाले हैं।
हम बच्चे भोले-भाले हैं।

देह अभिमानी नहीं रहेंगे
शान्ति की राह पर हम चलेंगे
ज्योति जगाने वाले हैं।
हम बच्चे भोले-भाले हैं।

माया से लड़ने वाले हैं
पीछे नहीं हटने वाले हैं
हम योद्धा बड़े निराले हैं
हम बच्चे भोले-भाले हैं।

जगदीश चन्द्र हसीजा, सम्पादक एवं प्रकाशक, 151 ई, कमला नगर, दिल्ली ने गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D (D) 178

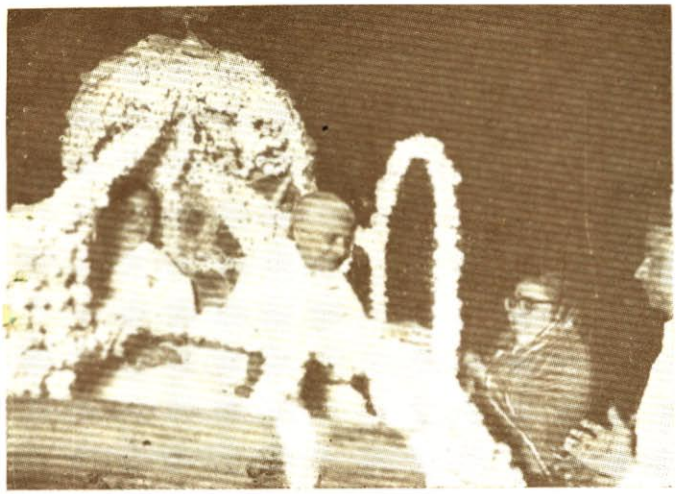

मुख्य प्रशासिका दादी प्रकाशमणी जी के हुबली में आगमन पर उन्हें एक सजी-सजाई जीप में शोभा यात्रा के रूप में ले जाया गया। यह चित्र उसी अवसर का है।

रायपुर में आयोजित आध्यात्मिक सम्मेलन के अवसर पर ब्र० कु० निर्मल शान्ता जी प्रवचन कर रही हैं। मंच पर वहाँ के कमिश्नर, महन्त लक्ष्मीदास व अन्य वक्तागण बैठे हैं।

इस चित्र में हिमाचल प्रदेश के ट्रांसपोर्ट मिनिस्टर भ्राता गुमान सिंह जी कुल्लु में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन कर रहे हैं। साथ में अन्य अधिकारीगण खड़े हैं।

कुल्लु में दशहरे के अवसर पर आयोजित राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् हिमाचल प्रदेश के परिवहन मन्त्री वहाँ के बहन-भाइयों के साथ खड़े हैं।

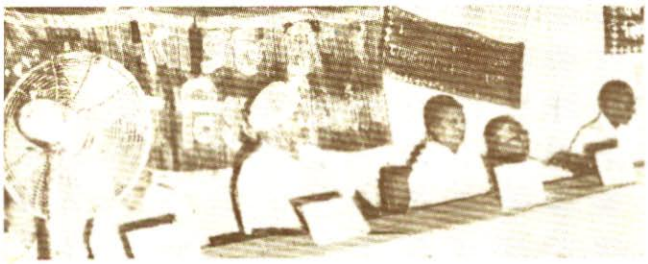

मण्डी डबवाली में आयोजित 'नव-निर्माण आध्यात्मिक सम्मेलन' के अवसर पर मंच पर ब्र० कु० कमला, भ्राता इकबाल सिंह (डी० एस० पी०), ब्र० कु० गुलजार मोहिनी, शीला तथा भ्राता लक्ष्मण जी बैठे हैं।

अमरावती सेवा-केन्द्र द्वारा धारणी में आयोजित आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन समारोह में वहाँ के प्रमुख सभापति तथा कालेज के प्रोफैसर व डाक्टर आदि स्टेज पर बैठे हैं। ब्र० कु० सीता जी प्रवचन कर रही हैं।

Regd. No. D (D) 178

धूले में आयोजित प्रदर्शनी का उद्घाटन वहाँ की शिव-शक्ति हाऊसिंगसो-साइटी, के अध्यक्ष भ्राता शिवाजीराव मराठे दीपक जलाकर कर रहे हैं।

तीन हजार मठ के जगतगुरु स्वामी गंगाधर जी मठ में आदरणीया दादी प्रकाश मणी जी (मुख्य प्रशासिका)का गुलदस्ता व हार द्वारा स्वागत कर रहे हैं।

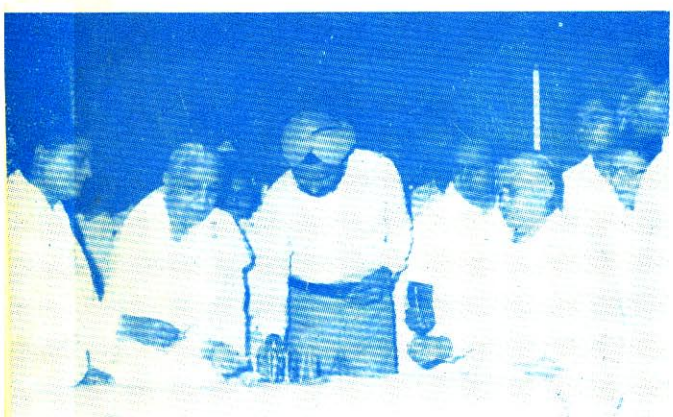

बरेली में आयोजित चरित-निर्माण आध्यात्मिक मेला का उद्घाटन वहाँ के जिलाधीश भ्राता डी० एस० वर्मा जी एवं ब्र०कु० निर्मल शान्ता जी मोमबत्ती जलाकर कर रहे हैं। साथ में ब्र० कु० हृदय मोहिनी जी, आत्म ईन्द्रा जी व अन्य बहन-भाई खड़े हैं।

ब्र०कु० वत्सलीना डा० सिद्ध लिंग स्वामी को 'पवित्र और योगी' बनने का ईश्वरीय सन्देश देते हुए राखी बाँध रही हैं।

हुबली सेवा केन्द्र के वार्षिकोत्सव समारोह में मँच पर भ्राता एफ० एच० मोहसीन (एम० पी०), टाउन प्लानिंग आफिसर भ्राता लक्ष्मण रेड्डी, ब्र०कु० निर्मला व अनुसूईया आदि बैठे हैं।